# قرآن مجید

## लफ़्ज़ी तरजुमा

# قَد اَفلَحَ

## पारा - 18

eParah

آيَاتُهَا: 118 — 23 سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ مَكِّيَّةٌ 74 — رُكُوْعَاتُهَا: 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قَدْ | اَفْلَحَ | الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ (1) | الَّذِيْنَ | هُمْ | فِيْ صَلَاتِهِمْ | خٰشِعُوْنَ ۙ (2) |
| यक़ीनन | फ़लाह पा गए | ईमान लाने वाले | वो लोग जो | वो | अपनी नमाज़ में | खुशूअ करने वाले हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالَّذِيْنَ | هُمْ | عَنِ اللَّغْوِ | مُعْرِضُوْنَ ۙ (3) | وَالَّذِيْنَ | هُمْ | لِلزَّكٰوةِ |
| और वो जो | वो | लग़्व बात से | ऐराज़ करने वाले हैं | और वो जो | वो | ज़कात को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فٰعِلُوْنَ ۙ (4) | وَالَّذِيْنَ | هُمْ | لِفُرُوْجِهِمْ | حٰفِظُوْنَ ۙ (5) | اِلَّا | عَلٰٓى |
| (अदा) करने वाले हैं | और वो जो | वो | अपनी शर्मगाहों की | हिफ़ाज़त करने वाले हैं | मगर | ऊपर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَزْوَاجِهِمْ | اَوْ | مَا | مَلَكَتْ | اَيْمَانُهُمْ | فَاِنَّهُمْ | غَيْرُ | مَلُوْمِيْنَ ۚ (6) |
| अपनी बीवियों के | या | जिनके | मालिक हुए | उनके दाऐं हाथ | तो बेशक वो | नहीं | मलामत किए गए |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَمَنِ | ابْتَغٰى | وَرَآءَ | ذٰلِكَ | فَاُولٰٓئِكَ | هُمُ | الْعٰدُوْنَ ۚ (7) | وَالَّذِيْنَ | هُمْ |
| तो जो कोई | चाहे | अलावा | इसके | तो यही लोग हैं | वो | जो हद से गुज़रने वाले हैं | और वो जो | वो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لِاَمٰنٰتِهِمْ | وَعَهْدِهِمْ | رٰعُوْنَ ۙ (8) | وَالَّذِيْنَ | هُمْ | عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ |
| अपनी अमानतों की | और अपने अहद की | निगरानी करने वाले है | और वो जो | वो | अपनी नमाज़ों पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُحَافِظُوْنَ ۘ (9) | اُولٰٓئِكَ | هُمُ | الْوٰرِثُوْنَ ۙ (10) | الَّذِيْنَ | يَرِثُوْنَ | الْفِرْدَوْسَ ؕ |
| वो हिफ़ाज़त करते हैं | यही लोग हैं | वो | जो वारिस हैं | वो जो | वारिस होंगे | फ़िरदौस के |

وقف لازم

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| هُمْ | فِيْهَا | خٰلِدُوْنَ (11) | وَلَقَدْ | خَلَقْنَا | الْاِنْسَانَ | مِنْ سُلٰلَةٍ |
| वो | उसमें | हमेशा रहने वाले हैं | और अलबत्ता तहक़ीक़ | पैदा किया हमने | इंसान को | सत/निचोड़ से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْ طِيْنٍ ۚ (12) | ثُمَّ | جَعَلْنٰهُ | نُطْفَةً | فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۪ (13) | ثُمَّ | خَلَقْنَا |
| मिट्टी के | फिर | बनाया हमने उसे | नुत्फ़ा | एक महफ़ूज़ ठिकाने में | फिर | बनाया हमने |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| النُّطْفَةَ | عَلَقَةً | فَخَلَقْنَا | الْعَلَقَةَ | مُضْغَةً | فَخَلَقْنَا | الْمُضْغَةَ |
| नुत्फ़े को | अलक़/जमा हुआ ख़ून | फिर बनाया हमने | जमे हुए ख़ून को | मुदग़ा/गोश्त की बोटी | फिर बनाया हमने | बोटी को |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عِظٰمًا | فَكَسَوْنَا | الْعِظٰمَ | لَحْمًا ق | ثُمَّ | اَنْشَاْنٰهُ | خَلْقًا | اٰخَرَ ط |
| हड्डियां | फिर पहनाया हमने | हड्डियों को | गोश्त | फिर | उठाया हमने उसे | मख़्लूक़ | दूसरी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَتَبٰرَكَ | اللّٰهُ | اَحْسَنُ | الْخٰلِقِيْنَ ﴿14﴾ ط | ثُمَّ | اِنَّكُمْ | بَعْدَ ذٰلِكَ |
| तो बहुत बाबरकत है | अल्लाह | जो सब से अच्छा है | पैदा करने वालों में | फिर | बेशक तुम | बाद इसके |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَمَيِّتُوْنَ ﴿15﴾ ط | ثُمَّ | اِنَّكُمْ | يَوْمَ | الْقِيٰمَةِ | تُبْعَثُوْنَ ﴿16﴾ | وَلَقَدْ | خَلَقْنَا |
| ज़रूर मरने वाले हो | फिर | बेशक तुम | दिन | क़यामत के | तुम उठाए जाओगे | और अलबत्ता तहक़ीक़ | बनाए हमने |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَوْقَكُمْ | سَبْعَ | طَرَآئِقَ ص | وَمَا | كُنَّا | عَنِ الْخَلْقِ | غٰفِلِيْنَ ﴿17﴾ | وَاَنْزَلْنَا |
| तुम्हारे ऊपर | सात | रास्ते | और नहीं | हैं हम | मख़्लूक़ से | ग़ाफ़िल | और उतारा हमने |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ السَّمَآءِ | مَآءً | بِقَدَرٍ | فَاَسْكَنّٰهُ | فِي الْاَرْضِ ص | وَاِنَّا |
| आसमान से | पानी | साथ एक अंदाज़े के | फिर ठहराया हमने उसे | ज़मीन में | और बेशक हम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَلٰى ذَهَابٍ | بِهٖ | لَقٰدِرُوْنَ ﴿18﴾ ج | فَاَنْشَاْنَا | لَكُمْ | جَنّٰتٍ |
| ले जाने पर | उसे | अलबत्ता क़ादिर हैं | फिर पैदा किया हमने | तुम्हारे लिए | बाग़ात को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْ نَّخِيْلٍ | وَّاَعْنَابٍ م | لَكُمْ | فِيْهَا | فَوَاكِهُ | كَثِيْرَةٌ | وَّمِنْهَا |
| खजूरों के | और अंगूरों के | तुम्हारे लिए | इनमें | फल हैं | बहुत से | और इनमें से |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تَاْكُلُوْنَ ﴿19﴾ لا | وَشَجَرَةً | تَخْرُجُ | مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ | تَنْبُتُ | بِالدُّهْنِ |
| तुम खाते हो | और एक दरख़्त | जो निकलता है | तूरे सीना से | वो उगता है | साथ चिकनाई के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَصِبْغٍ | لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿20﴾ | وَاِنَّ | لَكُمْ | فِي الْاَنْعَامِ | لَعِبْرَةً ط | نُسْقِيْكُمْ |
| और सालन | खाने वालों के लिए | और बेशक | तुम्हारे लिए | मवेशियों में | अलबत्ता इबरत/सबक़ है | हम पिलाते हैं तुम्हें |

وقف لازم

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّمَّا | فِيْ بُطُوْنِهَا | وَ لَكُمْ | فِيْهَا | مَنَافِعُ | كَثِيْرَةٌ | وَّ مِنْهَا |
| उससे जो | उनके पेटों में है | और तुम्हारे लिए | उनमें | फ़ायदे हैं | बहुत से | और इनमें से |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تَاْكُلُوْنَ ﴿21﴾ لا | وَ عَلَيْهَا | وَ عَلَى الْفُلْكِ | تُحْمَلُوْنَ ﴿22﴾ ع | وَ لَقَدْ | اَرْسَلْنَا |
| तुम खाते हो | और उन पर | और कश्तियों पर | तुम सवार किए जाते हो | और अलबत्ता तहक़ीक़ | भेजा हमने |

ع 1 22 1

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| نُوْحًا | اِلٰى قَوْمِهٖ | فَقَالَ | يٰقَوْمِ | اعْبُدُوا | اللّٰهَ | مَا | لَكُمْ |
| नूह को | तरफ़ उसकी क़ौम के | तो उसने कहा | ऐ मेरी क़ौम | इबादत करो | अल्लाह की | नहीं | तुम्हारे लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْ اِلٰهٍ | غَيْرُهٗ ؕ | اَفَلَا | تَتَّقُوْنَ ﴿23﴾ | فَقَالَ | الْمَلَؤُا | الَّذِيْنَ | كَفَرُوْا |
| कोई इलाह (बरहक़) | उसके सिवा | क्या फिर नहीं | तुम डरते | तो कहा | सरदारों ने | जिन्होंने | कुफ़्र किया |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ قَوْمِهٖ | مَا | هٰذَآ | اِلَّا | بَشَرٌ | مِّثْلُكُمْ لا | يُرِيْدُ | اَنْ | يَّتَفَضَّلَ |
| उसकी क़ौम में से | नहीं | ये | मगर | एक इंसान | तुम्हारे जैसा | जो चाहता है | कि | वो फ़ज़ीलत हासिल कर ले |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَيْكُمْ ؕ | وَ لَوْ | شَآءَ | اللّٰهُ | لَاَنْزَلَ | مَلٰٓئِكَةً ۚ | مَّا | سَمِعْنَا | بِهٰذَا |
| तुम पर | और अगर | चाहता | अल्लाह | अलबत्ता वो उतारता | फ़रिश्ते | नहीं | सुना हमने | इस बात को |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فِيْٓ اٰبَآئِنَا | الْاَوَّلِيْنَ ﴿24﴾ ج | اِنْ | هُوَ | اِلَّا | رَجُلٌ | بِهٖ | جِنَّةٌ | فَتَرَبَّصُوْا |
| अपने आबा ओ अजदाद में | पहले | नहीं | वो | मगर | एक शख़्स | जिसको | जुनून है | तो इंतिज़ार करो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِهٖ | حَتّٰى حِيْنٍ ﴿25﴾ | قَالَ | رَبِّ | انْصُرْنِيْ | بِمَا | كَذَّبُوْنِ ﴿26﴾ |
| साथ उसके | एक वक़्त तक | कहा | ऐ मेरे रब | मदद फ़रमा मेरी | इस वजह से जो | उन्होंने झुठलाया मुझे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاَوْحَيْنَآ | اِلَيْهِ | اَنِ | اصْنَعِ | الْفُلْكَ | بِاَعْيُنِنَا | وَ وَحْيِنَا |
| पस वही की हमने | तरफ़ उसके | कि | बना | कश्ती | हमारी निगाहों के सामने | और हमारी वही के मुताबिक़ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاِذَا | جَآءَ | اَمْرُنَا | وَ فَارَ | التَّنُّوْرُ لا | فَاسْلُكْ | فِيْهَا | مِنْ كُلٍّ |
| फिर जब | आ जाए हुक्म | हमारा | और जोश मारे | तन्नूर | तो दाख़िल कर ले | इसमें | हर क़िस्म के |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| زَوْجَيْنِ | اثْنَيْنِ | وَ اَهْلَكَ | اِلَّا | مَنْ | سَبَقَ | عَلَيْهِ | الْقَوْلُ | مِنْهُمْ ج |
| जोड़े (नर व मादा) | दोनों | और अपने अहलो अयाल को | मगर | जो | पहले हो चुकी | उस पर | बात | उनमें से |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَلَا | تُخَاطِبْنِيْ | فِي الَّذِيْنَ | ظَلَمُوْا ج | اِنَّهُمْ | مُّغْرَقُوْنَ ﴿27﴾ |
| और ना | तुम बात करना मुझसे | उनके मामले में जिन्होंने | ज़ुल्म किया | बेशक वो | ग़र्क़ किए जाने वाले हैं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاِذَا | اسْتَوَيْتَ | اَنْتَ | وَمَنْ | مَّعَكَ | عَلَى الْفُلْكِ | فَقُلِ | الْحَمْدُ |
| फिर जब | सवार हो जाओ तुम | तुम | और जो | तुम्हारे साथ हैं | कश्ती पर | तो कहना | सब तारीफ़ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لِلّٰهِ | الَّذِيْ | نَجّٰنَا | مِنَ الْقَوْمِ | الظّٰلِمِيْنَ ﴿28﴾ | وَقُلْ | رَّبِّ |
| अल्लाह के लिए है | जिसने | निजात दी हमें | उन लोगों से | जो ज़ालिम हैं | और कहना | ऐ मेरे रब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْزِلْنِيْ | مُنْزَلًا | مُّبٰرَكًا | وَّ اَنْتَ | خَيْرُ | الْمُنْزِلِيْنَ ﴿29﴾ | اِنَّ |
| उतार मुझे | उतारने की जगह | बाबरकत | और तू | बेहतर है | सब उतारने वालों से | बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَاٰيٰتٍ | وَّ اِنْ | كُنَّا | لَمُبْتَلِيْنَ ﴿30﴾ | ثُمَّ | اَنْشَاْنَا | مِنْ بَعْدِهِمْ |
| अलबत्ता निशानियां हैं | और बेशक | हैं हम | अलबत्ता आज़माने वाले | फिर | उठाए हमने | बाद इनके |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قَرْنًا | اٰخَرِيْنَ ج ﴿31﴾ | فَاَرْسَلْنَا | فِيْهِمْ | رَسُوْلًا | مِّنْهُمْ | اَنِ |
| लोग | दूसरे | तो भेजा हमने | इनमें | एक रसूल | इन्हीं में से | कि |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اعْبُدُوا | اَنِ | مِّنْهُمْ | رَسُوْلًا | فِيْهِمْ | فَاَرْسَلْنَا | اٰخَرِيْنَ ج ﴿31﴾ | قَرْنًا |
| इबादत करो | कि | इन्हीं में से | एक रसूल | इनमें | तो भेजा हमने | दूसरे | लोग |

ع 2 10 2

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهَ | مَا | لَكُمْ | مِّنْ اِلٰهٍ | غَيْرُهٗ ط | اَفَلَا | تَتَّقُوْنَ ع ﴿32﴾ | وَقَالَ |
| अल्लाह की | नहीं | तुम्हारे लिए | कोई इलाह (बरहक़) | उसके सिवा | क्या फिर नहीं | तुम डरते | और कहा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمَلَاُ | مِنْ قَوْمِهِ | الَّذِيْنَ | كَفَرُوْا | وَكَذَّبُوْا | بِلِقَآءِ | الْاٰخِرَةِ |
| सरदारों ने | उसकी क़ौम से | जिन्होंने | कुफ़्र किया | और झुठलाया | मुलाक़ात को | आख़िरत की |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَ اَتْرَفْنٰهُمْ | فِي الْحَيٰوةِ | الدُّنْيَا لا | مَا | هٰذَآ | اِلَّا | بَشَرٌ | مِّثْلُكُمْ لا |
| और ख़ुशहाली दी हमने उन्हें | ज़िंदगी में | दुनिया की | नहीं | ये | मगर | एक इंसान | तुम्हारे जैसा |

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَاْكُلُ | مِمَّا | تَاْكُلُوْنَ | مِنْهُ | وَيَشْرَبُ | مِمَّا | تَشْرَبُوْنَ ﴿33﴾ | وَلَئِنْ |
| वो खाता है | उससे जो | तुम खाते हो | जिससे | और वो पीता है | उससे जो | तुम पीते हो | और अलबत्ता अगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَطَعْتُمْ | بَشَرًا | مِّثْلَكُمْ | اِنَّكُمْ | اِذًا | لَّخٰسِرُوْنَ ﴿34﴾ | اَيَعِدُكُمْ |
| इताअत की तुमने | एक इंसान की | अपने जैसे | यक़ीनन तुम | तब होगे | अलबत्ता ख़सारा पाने वाले | क्या वो वादा देता है तुम्हें |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنَّكُمْ | اِذَا | مِتُّمْ | وَكُنْتُمْ | تُرَابًا | وَّعِظَامًا | اَنَّكُمْ | مُّخْرَجُوْنَ ﴿35﴾ |
| कि बेशक तुम | जब | मर जाओगे तुम | और हो जाओगे तुम | मिट्टी | और हड्डियां | बेशक तुम | निकाले जाने वाले हो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| هَيْهَاتَ | هَيْهَاتَ | لِمَا | تُوْعَدُوْنَ ﴿36﴾ | اِنْ | هِىَ | اِلَّا | حَيَاتُنَا |
| बहुत दूर है | बहुत दूर है | वो जो | तुम वादा दिए जा रहे हो | नहीं | ये | मगर | ज़िंदगी हमारी |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الدُّنْيَا | نَمُوْتُ | وَنَحْيَا | وَمَا | نَحْنُ | بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿37﴾ | اِنْ | هُوَ | اِلَّا |
| दुनिया की | हम मरते हैं | और हम जीते हैं | और नहीं | हम | उठाए जाने वाले | नहीं | वो | मगर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| رَجُلٌ | افْتَرٰى | عَلَى اللّٰهِ | كَذِبًا | وَّمَا | نَحْنُ | لَهٗ | بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿38﴾ |
| एक मर्द | उसने गढ़ लिया | अल्लाह पर | झूठ | और नहीं | हम | उसे | मानने वाले |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالَ | رَبِّ | انْصُرْنِىْ | بِمَا | كَذَّبُوْنِ ﴿39﴾ | قَالَ | عَمَّا | قَلِيْلٍ |
| कहा | ऐ मेरे रब | मदद कर मेरी | बवजह उसके जो | उन्होंने झुठलाया मुझे | कहा | इस (मुद्दत) में जो | थोड़ी है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَيُصْبِحُنَّ | نٰدِمِيْنَ ﴿40﴾ | فَاَخَذَتْهُمُ | الصَّيْحَةُ | بِالْحَقِّ | فَجَعَلْنٰهُمْ |
| अलबत्ता वो ज़रूर हो जाऐंगे | नादिम | तो पकड़ लिया उन्हें | चिंघाड़ ने | साथ हक़ के | तो कर दिया हमने उन्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| غُثَآءً | فَبُعْدًا | لِّلْقَوْمِ | الظّٰلِمِيْنَ ﴿41﴾ | ثُمَّ | اَنْشَاْنَا | مِنْ بَعْدِهِمْ |
| कूड़ा करकट | तो दूरी है | उन लोगों के लिए | जो ज़ालिम हैं | फिर | उठाईं हमने | बाद उनके |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قُرُوْنًا | اٰخَرِيْنَ ﴿42﴾ | مَا | تَسْبِقُ | مِنْ اُمَّةٍ | اَجَلَهَا | وَمَا |
| क़ौमें | दूसरी | ना | आगे बढ़ सकती है | कोई उम्मत | अपने मुक़र्रर वक़्त से | और ना |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿43﴾ ط | ثُمَّ | اَرْسَلْنَا | رُسُلَنَا | تَتْرَا ؕ | كُلَّمَا | جَآءَ | اُمَّةً |
| वो पीछे रह सकती है | फिर | भेजा हमने | अपने रसूलों को | पै दर पै | जब कभी | आया | किसी उम्मत में |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| رَّسُوْلُهَا | كَذَّبُوْهُ | فَاَتْبَعْنَا | بَعْضَهُمْ | بَعْضًا | وَّجَعَلْنٰهُمْ |
| रसूल उसका | उन्होंने झुठला दिया उसे | तो पीछे लाए हम | उनके बाज़ को | बाज़ के | और बना दिया हमने उन्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَحَادِيْثَ ۚ | فَبُعْدًا | لِّقَوْمٍ | لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿44﴾ | ثُمَّ | اَرْسَلْنَا | مُوْسٰى |
| क़िस्से कहानियां | तो दूरी है | उन लोगों के लिए | जो नहीं ईमान लाते | फिर | भेजा हमने | मूसा |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَ اَخَاهُ | هٰرُوْنَ ۙ | بِاٰيٰتِنَا | وَسُلْطٰنٍ | مُّبِيْنٍ ﴿45﴾ ۙ | اِلٰى فِرْعَوْنَ |
| और उसके भाई | हारून को | साथ अपनी निशानियों के | और दलील | वाज़ेह के | तरफ़ फ़िरऔन |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَ مَلَا۟ئِهٖ | فَاسْتَكْبَرُوْا | وَكَانُوْا | قَوْمًا | عَالِيْنَ ﴿46﴾ ۚ | فَقَالُوْٓا |
| और उसके सरदारों के | तो उन्होंने तकब्बुर किया | और थे वो | लोग | सरकश | तो वो कहने लगे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَنُؤْمِنُ | لِبَشَرَيْنِ | مِثْلِنَا | وَقَوْمُهُمَا | لَنَا | عٰبِدُوْنَ ﴿47﴾ ۚ |
| क्या हम ईमान लाऐं | दो इंसानों पर | अपने जैसे | और क़ौम इन दोनों की | हमारे लिए | ताबेअदार है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَكَذَّبُوْهُمَا | فَكَانُوْا | مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿48﴾ | وَ لَقَدْ | اٰتَيْنَا | مُوْسَى |
| तो उन्होंने झुठला दिया उन दोनों को | तो हो गए वो | हलाक होने वालों में से | और अलबत्ता तहक़ीक़ | दी हमने | मूसा को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْكِتٰبَ | لَعَلَّهُمْ | يَهْتَدُوْنَ ﴿49﴾ | وَجَعَلْنَا | ابْنَ مَرْيَمَ | وَ اُمَّهٗٓ | اٰيَةً |
| किताब | ताकि वो | वो हिदायत पाऐं | और बनाया हमने | इब्ने मरयम | और उसकी मां को | एक निशानी |

ع 3 18 3

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَّاٰوَيْنٰهُمَآ | اِلٰى رَبْوَةٍ | ذَاتِ قَرَارٍ | وَّمَعِيْنٍ ﴿50﴾ ع | يٰٓاَيُّهَا | الرُّسُلُ |
| और पनाह दी हमने उन दोनों को | तरफ़ बुलंद जगह के | क़रार/सुकून वाली | और बहते चश्मे वाली | ऐ | पैग़म्बरो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كُلُوْا | مِنَ الطَّيِّبٰتِ | وَاعْمَلُوْا | صَالِحًا ؕ | اِنِّيْ | بِمَا | تَعْمَلُوْنَ |
| खाओ | पाकीज़ा चीज़ों में से | और अमल करो | नेक | बेशक मैं | उसे जो | तुम अमल करते हो |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلِيْمٌ ﴿51﴾ ط | وَاِنَّ | هٰذِهٖٓ | اُمَّتُكُمْ | اُمَّةً | وَّاحِدَةً | وَّاَنَا | رَبُّكُمْ |
| ख़ूब जानने वाला हूं | और बेशक | ये | उम्मत तुम्हारी | उम्मत है | एक ही | और मैं | रब हूं तुम्हारा |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَاتَّقُوْنِ ﴿52﴾ | فَتَقَطَّعُوْٓا | اَمْرَهُمْ | بَيْنَهُمْ | زُبُرًا ط | كُلُّ حِزْبٍ |
| पस डरो मुझसे | तो उन्होंने जुदा-जुदा कर लिया | मामला अपना | आपस में | टुकड़े-टुकड़े करके | हर फ़िरक़ा/गिरोह (के लोग) |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بِمَا | لَدَيْهِمْ | فَرِحُوْنَ ﴿53﴾ | فَذَرْهُمْ | فِيْ غَمْرَتِهِمْ | حَتّٰى حِيْنٍ ﴿54﴾ |
| उस पर जो | उनके पास है | ख़ुश हैं | तो छोड़ दीजिए उन्हें | उनकी ग़फ़लत में | एक वक़्त तक |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَيَحْسَبُوْنَ | اَنَّمَا | نُمِدُّهُمْ | بِهٖ | مِنْ مَّالٍ | وَّبَنِيْنَ ﴿55﴾ لا |
| क्या वो समझते हैं | कि बेशक | जो हम मदद दे रहे हैं उन्हें | साथ किसी भी (चीज़) के | माल से | और बेटों से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| نُسَارِعُ | لَهُمْ | فِي الْخَيْرٰتِ ط | بَلْ | لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿56﴾ | اِنَّ | الَّذِيْنَ |
| कि हम जल्दी कर रहे हैं | उनके लिए | भलाइयों में | बल्कि | वो शऊर नहीं रखते | बेशक | वो जो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| هُمْ | مِّنْ خَشْيَةِ | رَبِّهِمْ | مُّشْفِقُوْنَ ﴿57﴾ لا | وَالَّذِيْنَ | هُمْ | بِاٰيٰتِ | رَبِّهِمْ |
| वो | ख़ौफ़ से | अपने रब के | डरने वाले हैं | और वो जो | वो | आयात पर | अपने रब की |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُؤْمِنُوْنَ ﴿58﴾ لا | وَالَّذِيْنَ | هُمْ | بِرَبِّهِمْ | لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿59﴾ لا | وَالَّذِيْنَ | يُؤْتُوْنَ |
| वो ईमान लाते हैं | और वो जो | वो | अपने रब के साथ | नहीं वो शरीक करते | और वो जो | देते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مَآ | اٰتَوْا | وَّقُلُوْبُهُمْ | وَجِلَةٌ | اَنَّهُمْ | اِلٰى رَبِّهِمْ | رٰجِعُوْنَ ﴿60﴾ لا |
| जो कुछ | वो देते हैं | जब कि दिल उनके | लरज़ते हैं | कि बेशक वो | तरफ़ अपने रब के | लौटने वाले हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اُولٰٓئِكَ | يُسٰرِعُوْنَ | فِي الْخَيْرٰتِ | وَهُمْ | لَهَا | سٰبِقُوْنَ ﴿61﴾ | وَلَا |
| यही लोग हैं | वो जल्दी करते हैं | भलाईयों में | और वो ही | उनके लिए | सबक़त करने वाले हैं | और नहीं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| نُكَلِّفُ | نَفْسًا | اِلَّا | وُسْعَهَا | وَلَدَيْنَا | كِتٰبٌ | يَّنْطِقُ | بِالْحَقِّ |
| हम तकलीफ़ देते | किसी नफ़्स को | मगर | उसकी वुसअत के मुताबिक़ | और हमारे पास | एक किताब है | जो बोलती है | साथ हक़ के |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَهُمْ | لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿62﴾ | بَلْ | قُلُوْبُهُمْ | فِيْ غَمْرَةٍ | مِّنْ هٰذَا | وَلَهُمْ |
| और वो | ना वो ज़ुल्म किए जाएंगे | बल्कि | दिल उनके | ग़फ़लत में हैं | इससे | और उनके लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَعْمَالٌ | مِّنْ دُوْنِ | ذٰلِكَ | هُمْ | لَهَا | عٰمِلُوْنَ ﴿63﴾ | حَتّٰٓى | اِذَآ |
| कई आमाल हैं | इलावा | उसके | वो | उन्हें | करने वाले हैं | यहां तक कि | जब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَخَذْنَا | مُتْرَفِيْهِمْ | بِالْعَذَابِ | اِذَا | هُمْ | يَجْـَٔرُوْنَ ﴿64﴾ ط | لَا تَجْـَٔرُوا |
| पकड़ेंगे हम | उनके ख़ुशहाल लोगों को | साथ अज़ाब के | तब यकायक | वो | चिल्लाने लगेंगे | ना तुम चिल्लाओ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قف الْيَوْمَ | اِنَّكُمْ | مِّنَّا | لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿65﴾ | قَدْ | كَانَتْ | اٰيٰتِيْ | تُتْلٰى |
| आज | बेशक तुम | हमसे | ना तुम मदद किए जाओगे | तहक़ीक़ | थीं | मेरी आयात | पढ़ी जातीं |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَلَيْكُمْ | فَكُنْتُمْ | عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ | تَنْكِصُوْنَ ﴿66﴾ لا | مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖ ق | بِهٖ |
| तुम पर | तो थे तुम | अपनी एड़ियों पर | तुम फिर जाते | तकब्बुर करते हुए | साथ इसके |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سٰمِرًا | تَهْجُرُوْنَ ﴿67﴾ | اَفَلَمْ | يَدَّبَّرُوا | الْقَوْلَ | اَمْ | جَآءَهُمْ |
| रात को बातें करते हुए | तुम बेहूदा गोई करते थे | क्या भला नहीं | उन्होंने ग़ौरो-फ़िक्र किया | कलाम में | या | आया उनके पास |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَّا | لَمْ | يَاْتِ | اٰبَآءَهُمُ | الْاَوَّلِيْنَ ﴿68﴾ ز | اَمْ | لَمْ | يَعْرِفُوْا |
| जो | नहीं | आया | उनके आबा ओ अजदाद के पास | पहले | या | नहीं | उन्होंने पहचाना |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| رَسُوْلَهُمْ | فَهُمْ | لَهٗ | مُنْكِرُوْنَ ﴿69﴾ ز | اَمْ | يَقُوْلُوْنَ | بِهٖ | جِنَّةٌ ط |
| अपने रसूल को | तो वो | उसके | इंकारी हैं | या | वो कहते हैं | इसे | जुनून है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| بَلْ | جَآءَهُمْ | بِالْحَقِّ | وَاَكْثَرُهُمْ | لِلْحَقِّ | كٰرِهُوْنَ ﴿70﴾ | وَلَوِ | اتَّبَعَ |
| बल्कि | वो लाया है उनके पास | हक़ | और अक्सर उनके | हक़ को | नापसंद करने वाले हैं | और अगर | पैरवी करता |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْحَقُّ | اَهْوَآءَهُمْ | لَفَسَدَتِ | السَّمٰوٰتُ | وَالْاَرْضُ | وَمَنْ | فِيْهِنَّ ط |
| हक़ | उनकी ख़्वाहिशात की | अलबत्ता बिगड़ जाते | आसमान | और ज़मीन | और जो कोई | इनमें है |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بَلْ | اَتَيْنٰهُمْ | بِذِكْرِهِمْ | فَهُمْ | عَنْ ذِكْرِهِمْ | مُّعْرِضُوْنَ ﴿71﴾ ط | اَمْ |
| बल्कि | लाए हैं हम इनके पास | ज़िक्र इनका | तो वो | अपने ही ज़िक्र से | मुंह मोड़ने वाले हैं | या |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَسْـَٔلُهُمْ | خَرْجًا | فَخَرَاجُ | رَبِّكَ | خَيْرٌ ﷺ | وَّهُوَ | خَيْرُ |
| आप सवाल करते हैं इनसे | माल/अदायगी का | तो ख़िराज/अजरो सवाब | आपके रब का | बेहतर है | और वो | बेहतर है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الرّٰزِقِيْنَ ﴿72﴾ | وَاِنَّكَ | لَتَدْعُوْهُمْ | اِلٰى صِرَاطٍ | مُّسْتَقِيْمٍ ﴿73﴾ | وَاِنَّ |
| सब रिज़्क़ देने वालों से | और बेशक आप | अलबत्ता आप बुलाते हैं उन्हें | तरफ़ रास्ते | सीधे के | और बेशक |

ع 3

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْنَ | لَا يُؤْمِنُوْنَ | بِالْاٰخِرَةِ | عَنِ الصِّرَاطِ | لَنٰكِبُوْنَ ﴿74﴾ | وَلَوْ |
| वो जो | नहीं वो ईमान लाते | आख़िरत पर | रास्ते से | अलबत्ता हट जाने वाले हैं | और अगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| رَحِمْنٰهُمْ | وَكَشَفْنَا | مَا | بِهِمْ | مِّنْ ضُرٍّ | لَّلَجُّوْا | فِيْ طُغْيَانِهِمْ |
| रहम करें हम उन पर | और खोल दें हम | जो | उन्हें है | तकलीफ़ में से | अलबत्ता वो अड़े रहेंगे | अपनी सरकशी में |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَعْمَهُوْنَ ﴿75﴾ | وَلَقَدْ | اَخَذْنٰهُمْ | بِالْعَذَابِ | فَمَا | اسْتَكَانُوْا |
| भटकते हुए | और अलबत्ता तहक़ीक़ | पकड़ लिया हमने उन्हें | साथ अज़ाब के | पस ना | उन्होंने आजिज़ी की |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لِرَبِّهِمْ | وَمَا | يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿76﴾ | حَتّٰٓى | اِذَا | فَتَحْنَا | عَلَيْهِمْ | بَابًا |
| अपने रब के लिए | और ना | वो गिड़ गिड़ाए | यहां तक की | जब | खोल दिया हमने | उन पर | दरवाज़ा |

ع 4 27 4

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ | اِذَا | هُمْ | فِيْهِ | مُبْلِسُوْنَ ﴿77﴾ ع | وَهُوَ | الَّذِيْٓ |
| सख़्त अज़ाब वाला | यकायक | वो | उसमें | मायूस होने वाले थे | और वो ही है | जिसने |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَنْشَاَ | لَكُمُ | السَّمْعَ | وَالْاَبْصَارَ | وَالْاَفْـِٕدَةَ ط | قَلِيْلًا مَّا |
| पैदा किए | तुम्हारे लिए | कान | और आंखें | और दिल | कितना कम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تَشْكُرُوْنَ ﴿78﴾ | وَهُوَ | الَّذِيْ | ذَرَاَكُمْ | فِي الْاَرْضِ | وَاِلَيْهِ |
| तुम शुक्र अदा करते हो | और वो ही है | जिसने | फैला दिया तुम्हें | ज़मीन में | और तरफ़ उसी के |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تُحْشَرُوْنَ ﴿79﴾ | وَهُوَ | الَّذِیْ | یُحْیٖ | وَیُمِیْتُ | وَلَهُ | اخْتِلَافُ |
| तुम इकट्ठे किए जाओगे | और वो ही है | जो | ज़िंदा करता है | और वो मौत देता है | और उसी के लिए है | आगे-पीछे आना |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّیْلِ | وَالنَّهَارِ ؕ | اَفَلَا | تَعْقِلُوْنَ ﴿80﴾ | بَلْ | قَالُوْا | مِثْلَ | مَا |
| रात | और दिन का | क्या फिर नहीं | तुम अक़्ल से काम लेते | बल्कि | उन्होंने कहा | मानिंद | उसके जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالَ | الْاَوَّلُوْنَ ﴿81﴾ | قَالُوْٓا | ءَاِذَا | مِتْنَا | وَكُنَّا | تُرَابًا |
| कहा था | पहलों ने | उन्होंने कहा | क्या जब | मर जाऐंगे हम | और हो जाऐंगे हम | मिट्टी |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّعِظَامًا | ءَاِنَّا | لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿82﴾ | لَقَدْ | وُعِدْنَا | نَحْنُ | وَاٰبَآؤُنَا |
| और हड्डियां | क्या वाक़ई हम | अलबत्ता उठाए जाने वाले हैं | अलबत्ता तहक़ीक़ | वादा किए गए हम | हम | और आबा ओ अजदाद हमारे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| هٰذَا | مِنْ قَبْلُ | اِنْ | هٰذَآ | اِلَّآ | اَسَاطِیْرُ | الْاَوَّلِیْنَ ﴿83﴾ | قُلْ |
| इसका | इससे क़ब्ल | नहीं | ये | मगर | कहानियां हैं | पहलों की | कह दीजिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لِّمَنِ | الْاَرْضُ | وَمَنْ | فِیْهَآ | اِنْ | كُنْتُمْ | تَعْلَمُوْنَ ﴿84﴾ |
| किसके लिए है | ज़मीन | और जो कुछ | इसमें है | अगर | हो तुम | तुम जानते |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| سَیَقُوْلُوْنَ | لِلّٰهِ ؕ | قُلْ | اَفَلَا | تَذَكَّرُوْنَ ﴿85﴾ | قُلْ | مَنْ | رَّبُّ |
| अनक़रीब वो कहेंगे | अल्लाह ही के लिए | कह दीजिए | क्या फिर नहीं | तुम नसीहत पकड़ते | कह दीजिए | कौन | रब है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ | وَرَبُّ | الْعَرْشِ | الْعَظِیْمِ ﴿86﴾ | سَیَقُوْلُوْنَ | لِلّٰهِ ؕ |
| सात आसमानों का | और रब है | अर्शे | अज़ीम का | अनक़रीब वो कहेंगे | अल्लाह ही के लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قُلْ | اَفَلَا | تَتَّقُوْنَ ﴿87﴾ | قُلْ | مَنْ | بِیَدِهٖ | مَلَكُوْتُ | كُلِّ |
| कह दीजिए | क्या भला नहीं | तुम डरते | कह दीजिए | कौन है | जिसके हाथ में है | बादशाहत | हर |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| شَیْءٍ | وَّهُوَ | یُجِیْرُ | وَلَا | یُجَارُ | عَلَیْهِ | اِنْ | كُنْتُمْ | تَعْلَمُوْنَ ﴿88﴾ |
| चीज़ की | और वो | वो पनाह देता है | और नहीं | पनाह दी जा सकती | उसके ख़िलाफ़ | अगर | हो तुम | तुम इल्म रखते |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سَيَقُوْلُوْنَ | لِلّٰهِ ؕ | قُلْ | فَاَنّٰى | تُسْحَرُوْنَ ﴿89﴾ | بَلْ | اَتَيْنٰهُمْ |
| अनक़रीब वो कहेंगे | अल्लाह ही के लिए | कह दीजिए | तो कहां से | तुम मसहूर किए जाते हो | बल्कि | हम लाए हैं उनके पास |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| بِالْحَقِّ | وَ اِنَّهُمْ | لَكٰذِبُوْنَ ﴿90﴾ | مَا | اتَّخَذَ | اللّٰهُ | مِنْ وَّلَدٍ | وَّ مَا |
| हक़ को | और बेशक वो | अलबत्ता झूठे हैं | नहीं | बनाई | अल्लाह ने | कोई औलाद | और नहीं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كَانَ | مَعَهٗ | مِنْ اِلٰهٍ | اِذًا | لَّذَهَبَ | كُلُّ | اِلٰهٍ | بِمَا | خَلَقَ |
| है | साथ उसके | कोई इलाह | तब | अलबत्ता ले जाता | हर | इलाह | उसे जो | उसने पैदा किया |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَ لَعَلَا | بَعْضُهُمْ | عَلٰى بَعْضٍ ؕ | سُبْحٰنَ | اللّٰهِ | عَمَّا | يَصِفُوْنَ ﴿91﴾ ۙ |
| और अलबत्ता चढ़ाई करता | बाज़ उनका | बाज़ पर | पाक है | अल्लाह | उससे जो | वो बयान करते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عٰلِمِ | الْغَيْبِ | وَ الشَّهَادَةِ | فَتَعٰلٰى | عَمَّا | يُشْرِكُوْنَ ﴿92﴾ ع | قُلْ |
| जानने वाला है | ग़ैब | और हाज़िर का | पस वो बहुत बुलंद है | उससे जो | वो शरीक करते हैं | कह दीजिए |

ع 5 15 5

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| رَبِّ | اِمَّا | تُرِيَنِّيْ | مَا | يُوْعَدُوْنَ ﴿93﴾ ۙ | رَبِّ | فَلَا | تَجْعَلْنِيْ |
| ऐ मेरे रब | अगर | तू दिखाए मुझे | जो | वो वादा किए जाते हैं | ऐ मेरे रब | तो ना | तू करना मुझे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِي الْقَوْمِ | الظّٰلِمِيْنَ ﴿94﴾ | وَ اِنَّا | عَلٰٓى | اَنْ | نُّرِيَكَ | مَا |
| उन लोगों में से | जो ज़ालिम हैं | और बेशक हम | इस (बात) पर | कि | हम दिखाऐं आपको | जिसका |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| نَعِدُهُمْ | لَقٰدِرُوْنَ ﴿95﴾ | اِدْفَعْ | بِالَّتِيْ | هِيَ | اَحْسَنُ |
| हम वादा कर रहे हैं उनसे | अलबत्ता क़ादिर हैं | दूर कर दीजिए | उस (तरीक़े) से | वो (जो) | ज़्यादा अच्छा है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| السَّيِّئَةَ ؕ | نَحْنُ | اَعْلَمُ | بِمَا | يَصِفُوْنَ ﴿96﴾ | وَ قُلْ | رَّبِّ |
| बुराई को | हम | ख़ूब जानते हैं | उसे जो | वो बयान करते हैं | और कह दीजिए | ऐ मेरे रब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَعُوْذُ بِكَ | مِنْ هَمَزٰتِ | الشَّيٰطِيْنِ ﴿97﴾ ۙ | وَ اَعُوْذُ بِكَ | رَبِّ | اَنْ |
| मैं पनाह लेता हूं तेरी | वसवसों से | शैतानों के | और मैं पनाह लेता हूं तेरी | ऐ मेरे रब | इससे कि |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَّحْضُرُوْنِ ﴿98﴾ | حَتّٰٓى | اِذَا | جَآءَ | اَحَدَهُمُ | الْمَوْتُ | قَالَ | رَبِّ |
| वो हाज़िर हों मेरे पास | यहां तक कि | जब | आ जाएगी | उनमें से एक को | मौत | कहेगा | ऐ मेरे रब |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ارْجِعُوْنِ ﴿99﴾ لَعَلِّيْٓ | اَعْمَلُ | صَالِحًا | فِيْمَا | تَرَكْتُ | كَلَّا ؕ | اِنَّهَا |
| वापस लौटा दो मुझे | ताकि मैं | मैं अमल करूं | नेक | उसमें जो | छोड़ आया मैं | हरगिज़ नहीं | बेशक वो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كَلِمَةٌ | هُوَ | قَآئِلُهَا ؕ | وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ | بَرْزَخٌ | اِلٰى يَوْمِ | يُبْعَثُوْنَ ﴿100﴾ |
| एक बात है | वो | कहने वाला है उसे | और आगे उनके | बरज़ख़ है | उस दिन तक | वो सब उठाए जाऐंगे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاِذَا | نُفِخَ | فِي الصُّوْرِ | فَلَآ | اَنْسَابَ | بَيْنَهُمْ | يَوْمَئِذٍ | وَّلَا |
| फिर जब | फूंक मारी जाएगी | सूर में | तो नहीं | रिश्तेदारियां | दर्मियान उनके | उस दिन | और ना |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿101﴾ | فَمَنْ | ثَقُلَتْ | مَوَازِيْنُهٗ | فَاُولٰٓئِكَ | هُمُ | الْمُفْلِحُوْنَ ﴿102﴾ |
| वो एक दूसरे से सवाल करेंगे | तो जो कोई | भारी हुए | पलड़े उसके | तो यही लोग हैं | वो | जो फ़लाह पाने वाले हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَنْ | خَفَّتْ | مَوَازِيْنُهٗ | فَاُولٰٓئِكَ | الَّذِيْنَ | خَسِرُوْٓا | اَنْفُسَهُمْ |
| और जो कोई कि | हल्के हुए | पलड़े उसके | तो यही लोग हैं | वो जिन्होंने | ख़सारे में डाला | अपने आपको |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِيْ جَهَنَّمَ | خٰلِدُوْنَ ﴿103﴾ ۚ | تَلْفَحُ | وُجُوْهَهُمُ | النَّارُ | وَهُمْ | فِيْهَا |
| जहन्नम में | हमेशा रहने वाले हैं | झुलसा देगी | उनके चेहरों को | आग | और वो | उसमें |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كٰلِحُوْنَ ﴿104﴾ | اَلَمْ | تَكُنْ | اٰيٰتِيْ | تُتْلٰى | عَلَيْكُمْ | فَكُنْتُمْ | بِهَا |
| मुंह बिगाड़ने वाले होंगे | क्या ना | थीं | आयात मेरी | पढ़ी जातीं | तुम पर | तो थे तुम | उन्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تُكَذِّبُوْنَ ﴿105﴾ | قَالُوْا | رَبَّنَا | غَلَبَتْ | عَلَيْنَا | شِقْوَتُنَا | وَكُنَّا |
| तुम झुठलाते | वो कहेंगे | ऐ हमारे रब | ग़ालिब आ गई | हम पर | बदबख़्ती हमारी | और थे हम |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَوْمًا | ضَآلِّيْنَ ﴿106﴾ | رَبَّنَآ | اَخْرِجْنَا | مِنْهَا | فَاِنْ | عُدْنَا | فَاِنَّا |
| लोग | गुमराह | ऐ हमारे रब | निकाल दे हमें | इससे | फिर अगर | दोबारा करें हम | तो बेशक हम |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| ظٰلِمُوْنَ ﴿107﴾ | قَالَ | اخْسَـُٔوْا | فِيْهَا | وَلَا | تُكَلِّمُوْنِ ﴿108﴾ | اِنَّهٗ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़ालिम होंगे | वो फ़रमाएगा | पड़े रहो फिटकारे हुए | इसी में | और ना | तुम कलाम करो मुझसे | बेशक वो |

| كَانَ | فَرِيْقٌ | مِّنْ عِبَادِىْ | يَقُوْلُوْنَ | رَبَّنَآ | اٰمَنَّا | فَاغْفِرْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| था | एक गिरोह | मेरे बंदों में से | वो कहते थे | ऐ हमारे रब | ईमान लाए हम | पस बख़्श दे |

| لَنَا | وَارْحَمْنَا | وَاَنْتَ | خَيْرُ | الرّٰحِمِيْنَ ﴿109﴾ ۚ | فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ | سِخْرِيًّا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हमें | और रहम फ़रमा हम पर | और तू | बेहतर है | सब रहम करने वालों में | तो बना लिया तुमने उन्हें | मज़ाक़ |

| حَتّٰٓى | اَنْسَوْكُمْ | ذِكْرِىْ | وَكُنْتُمْ | مِّنْهُمْ | تَضْحَكُوْنَ ﴿110﴾ | اِنِّىْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| यहां तक कि | उन्होंने भुलवा दिया तुम्हें | ज़िक्र मेरा | और थे तुम | उनसे | तुम हंसी किया करते | बेशक मैं |

| جَزَيْتُهُمُ | الْيَوْمَ | بِمَا | صَبَرُوْٓا | اَنَّهُمْ | هُمُ | الْفَآئِزُوْنَ ﴿111﴾ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बदला दिया मैंने उन्हें | आज | बवजह उसके जो | उन्होंने सब्र किया | बेशक वो | वो ही | कामयाब होने वाले हैं |

| قٰلَ | كَمْ | لَبِثْتُمْ | فِى الْاَرْضِ | عَدَدَ | سِنِيْنَ ﴿112﴾ | قَالُوْا | لَبِثْنَا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वो फ़रमाएगा | कितना | ठहरे तुम | ज़मीन में | गिनती में | सालों की | वो कहेंगे | ठहरे हम |

| يَوْمًا | اَوْ | بَعْضَ | يَوْمٍ | فَسْـَٔلِ | الْعَآدِّيْنَ ﴿113﴾ | قٰلَ | اِنْ | لَّبِثْتُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एक दिन | या | कुछ हिस्सा | दिन का | पस पूछ लीजिए | गिनने वालों से | वो फ़रमाएगा | नहीं | ठहरे तुम |

| اِلَّا | قَلِيْلًا | لَّوْ | اَنَّكُمْ | كُنْتُمْ | تَعْلَمُوْنَ ﴿114﴾ | اَفَحَسِبْتُمْ | اَنَّمَا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मगर | बहुत थोड़ा | काश | कि बेशक तुम | होते तुम | तुम जानते | क्या भला समझा था तुमने | कि बेशक |

| خَلَقْنٰكُمْ | عَبَثًا | وَّاَنَّكُمْ | اِلَيْنَا | لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿115﴾ | فَتَعٰلَى | اللّٰهُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पैदा किया हमने तुम्हें | बेकार | और बेशक तुम | तरफ़ हमारे | ना तुम लौटाए जाओगे | तो बहुत बुलंद है | अल्लाह |

| الْمَلِكُ | الْحَقُّ ۚ | لَآ | اِلٰهَ | اِلَّا | هُوَ ۚ | رَبُّ | الْعَرْشِ | الْكَرِيْمِ ﴿116﴾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बादशाह | हक़ीक़ी | नहीं | कोई इलाह (बरहक़) | मगर | वो ही | रब है | अर्शे | करीम का |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَنْ | يَّدْعُ | مَعَ | اللّٰهِ | اِلٰهًا | اٰخَرَ ۙ | لَا بُرْهَانَ | لَهٗ | بِهٖ ۙ |
| और जो | पुकारे | साथ | अल्लाह के | इलाह | दूसरा | नहीं दलील | उसके लिए | इसकी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاِنَّمَا | حِسَابُهٗ | عِنْدَ | رَبِّهٖ ؕ | اِنَّهٗ | لَا يُفْلِحُ | الْكٰفِرُوْنَ ﴿117﴾ |
| तो बेशक | हिसाब है उसका | पास | उसके रब के | बेशक वो | नहीं वो फ़लाह पाऐंगे | जो काफ़िर हैं |

ع 6 26 6

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَقُلْ | رَّبِّ | اغْفِرْ | وَارْحَمْ | وَاَنْتَ | خَيْرُ | الرّٰحِمِيْنَ ﴿118﴾ ع |
| और कह दीजिए | ऐ मेरे रब | बख़्श दे | और रहम फ़रमा | और तू | बेहतर है | सब रहम करने वालों से |

## اٰيَاتُهَا: 64 — 24 سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ 102 — رُكُوْعَاتُهَا: 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سُوْرَةٌ | اَنْزَلْنٰهَا | وَفَرَضْنٰهَا | وَاَنْزَلْنَا | فِيْهَآ | اٰيٰتٍۢ | بَيِّنٰتٍ |
| ये एक सूरत है | नाज़िल किया हमने इसे | और फ़र्ज़ किया हमने इसे | और नाज़िल कीं हमने | इसमें | आयात | वाज़ेह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَّعَلَّكُمْ | تَذَكَّرُوْنَ ﴿1﴾ | اَلزَّانِيَةُ | وَالزَّانِيْ | فَاجْلِدُوْا | كُلَّ | وَاحِدٍ |
| ताकि तुम | तुम नसीहत पकड़ो | ज़ानिया औरत | और ज़ानी मर्द | पस कोड़े मारो | हर | एक को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْهُمَا | مِائَةَ | جَلْدَةٍ ۖ | وَّلَا | تَاْخُذْكُمْ | بِهِمَا | رَاْفَةٌ |
| इन दोनों में से | सौ | कोड़े | और ना | पकड़े तुम्हें | इन दोनों के बारे में | कोई तरस |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِيْ دِيْنِ | اللّٰهِ | اِنْ | كُنْتُمْ | تُؤْمِنُوْنَ | بِاللّٰهِ | وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ |
| दीन (क़ानून) के मामले में | अल्लाह के | अगर | हो तुम | तुम ईमान रखते | अल्लाह पर | और आख़िरी दिन पर |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَلْيَشْهَدْ | عَذَابَهُمَا | طَآئِفَةٌ | مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿2﴾ | اَلزَّانِيْ | لَا يَنْكِحُ |
| और ज़रूर हाज़िर हो | उन दोनों की सज़ा पर | एक गिरोह | मोमिनों में से | ज़ानी मर्द | नहीं निकाह करता |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَّا | زَانِيَةً | اَوْ | مُشْرِكَةً ۙ | وَّالزَّانِيَةُ | لَا يَنْكِحُهَآ | اِلَّا | زَانٍ |
| मगर | ज़ानिया औरत से | या | मुशरिका औरत से | और ज़ानिया औरत | नहीं निकाह करता उससे | मगर | ज़ानी मर्द |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَوْ | مُشْرِكٌ ۚ | وَحُرِّمَ | ذٰلِكَ | عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ③ | وَالَّذِيْنَ | يَرْمُوْنَ |
| या | मुशरिक मर्द | और हराम कर दिया गया | ये | मोमिनों पर | और वो लोग जो | तोहमत लगाऐं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمُحْصَنٰتِ | ثُمَّ | لَمْ | يَاْتُوْا | بِاَرْبَعَةِ | شُهَدَآءَ | فَاجْلِدُوْهُمْ | ثَمٰنِيْنَ |
| पाक दामन औरतों पर | फिर | ना | वो लाऐं | चार | गवाह | तो कोड़े मारो इन्हें | अस्सी |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| جَلْدَةً | وَّلَا | تَقْبَلُوْا | لَهُمْ | شَهَادَةً | اَبَدًا ۚ | وَاُولٰٓئِكَ | هُمُ |
| कोड़े | और ना | तुम क़ुबूल करो | उनकी | गवाही को | कभी भी | और यही लोग हैं | वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْفٰسِقُوْنَ ④ | اِلَّا | الَّذِيْنَ | تَابُوْا | مِنْۢ بَعْدِ | ذٰلِكَ | وَاَصْلَحُوْا ۚ |
| जो फ़ासिक़ हैं | सिवाए | उनके जिन्होंने | तौबा की | बाद | इसके | और उन्होंने इस्लाह कर ली |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاِنَّ | اللّٰهَ | غَفُوْرٌ | رَّحِيْمٌ ⑤ | وَالَّذِيْنَ | يَرْمُوْنَ | اَزْوَاجَهُمْ |
| तो बेशक | अल्लाह | बहुत बख़्शने वाला है | निहायत रहम करने वाला है | और वो लोग जो | तोहमत लगाते हैं | अपनी बीवियों पर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَمْ | يَكُنْ | لَّهُمْ | شُهَدَآءُ | اِلَّآ | اَنْفُسُهُمْ | فَشَهَادَةُ | اَحَدِهِمْ |
| और नहीं | हैं | उनके लिए | कोई गवाह | मगर | वो ख़ुद ही | तो गवाही होगी | उनमें से एक की |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَرْبَعُ | شَهٰدٰتٍ | بِاللّٰهِ ۙ | اِنَّهٗ | لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑥ | وَالْخَامِسَةُ |
| चार | गवाहियां | साथ अल्लाह (की क़सम) के | बेशक वो | अलबत्ता सच्चों में से है | और पांचवीं बार |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنَّ | لَعْنَتَ | اللّٰهِ | عَلَيْهِ | اِنْ | كَانَ | مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ⑦ | وَيَدْرَؤُا |
| कि बेशक | लानत हो | अल्लाह की | उस पर | अगर | है वो | झूठों में से | और टाल देगी |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَنْهَا | الْعَذَابَ | اَنْ | تَشْهَدَ | اَرْبَعَ | شَهٰدٰتٍ | بِاللّٰهِ ۙ | اِنَّهٗ |
| उस (औरत) से | सज़ा को | ये (बात) कि | वो गवाही दे | चार | गवाहियां | अल्लाह की क़सम के साथ | बेशक वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ⑧ | وَالْخَامِسَةَ | اَنَّ | غَضَبَ | اللّٰهِ | عَلَيْهَآ | اِنْ |
| अलबत्ता झूठों में से है | और पांचवीं बार | कि बेशक | ग़ज़ब हो | अल्लाह का | उस (औरत) पर | अगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كَانَ | مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑨ | وَ لَوْلَا | فَضْلُ | اللّٰهِ | عَلَيْكُمْ | وَ رَحْمَتُهٗ |
| है वो (मर्द) | सच्चों में से | और अगर ना होता | फ़ज़्ल | अल्लाह का | तुम पर | और रहमत उसकी |

ع 1 10 7

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَ اَنَّ | اللّٰهَ | تَوَّابٌ | حَكِيْمٌ ⑩ ع | اِنَّ | الَّذِيْنَ | جَآءُوْ | بِالْاِفْكِ |
| और बेशक | अल्लाह | बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला है | बहुत हिक्मत वाला है | बेशक | वो लोग जो | लाए हैं | बोहतान |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عُصْبَةٌ | مِّنْكُمْ ؕ | لَا تَحْسَبُوْهُ | شَرًّا | لَّكُمْ ؕ | بَلْ | هُوَ | خَيْرٌ | لَّكُمْ ؕ |
| एक गिरोह हैं | तुम में से | ना तुम समझो उसे | बुरा | अपने लिए | बल्कि | वो | अच्छा है | तुम्हारे लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لِكُلِّ | امْرِئٍ | مِّنْهُمْ | مَّا | اكْتَسَبَ | مِنَ الْاِثْمِ ۚ | وَالَّذِيْ | تَوَلّٰى |
| वास्ते हर | शख़्स के है | उनमें से | जो | उसने कमाया | गुनाह से | और वो जिसने | उठाया |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كِبْرَهٗ | مِنْهُمْ | لَهٗ | عَذَابٌ | عَظِيْمٌ ⑪ | لَّوْلَآ | اِذْ | سَمِعْتُمُوْهُ |
| बड़ा (बोझ) उसका | उनमें से | उसके लिए | अज़ाब है | बहुत बड़ा | क्यों ना | जब | सुना तुमने उसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ظَنَّ | الْمُؤْمِنُوْنَ | وَالْمُؤْمِنٰتُ | بِاَنْفُسِهِمْ | خَيْرًا ۙ | وَّقَالُوْا | هٰذَآ |
| गुमान किया | मोमिन मर्दों ने | और मोमिन औरतों ने | अपने बारे में | अच्छा | और कहा उन्होंने | ये है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِفْكٌ | مُّبِيْنٌ ⑫ | لَوْلَا | جَآءُوْ | عَلَيْهِ | بِاَرْبَعَةِ | شُهَدَآءَ ۚ | فَاِذْ |
| बोहतान | खुला | क्यों ना | वो लाए | उस पर | चार | गवाह | फिर जब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَمْ | يَاْتُوْا | بِالشُّهَدَآءِ | فَاُولٰٓئِكَ | عِنْدَ اللّٰهِ | هُمُ | الْكٰذِبُوْنَ ⑬ |
| नहीं | वो लाए | गवाहों को | तो यही लोग हैं | अल्लाह के यहां | वो | जो झूठे हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَ لَوْلَا | فَضْلُ | اللّٰهِ | عَلَيْكُمْ | وَ رَحْمَتُهٗ | فِي الدُّنْيَا | وَالْاٰخِرَةِ |
| और यक़ीनन ना होता | फ़ज़्ल | अल्लाह का | तुम पर | और रहमत उसकी | दुनिया में | और आख़िरत में |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَمَسَّكُمْ | فِيْ مَآ | اَفَضْتُمْ | فِيْهِ | عَذَابٌ | عَظِيْمٌ ⑭ ۚ | اِذْ | تَلَقَّوْنَهٗ |
| अलबत्ता पहुंच जाता तुम्हें | उस में से जो | पड़ गए थे तुम | जिसमें | अज़ाब | बहुत बड़ा | जब | तुम ले रहे थे उसे |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| بِاَلْسِنَتِكُمْ | وَتَقُوْلُوْنَ | بِاَفْوَاهِكُمْ | مَّا | لَيْسَ | لَكُمْ | بِهٖ | عِلْمٌ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपनी ज़बानों से | और तुम कह रहे थे | अपने मुंहों से | वो जो | नहीं (था) | तुम्हें | जिसका | कोई इल्म |

| وَّتَحْسَبُوْنَهٗ | هَيِّنًا ۖ | وَّهُوَ | عِنْدَ | اللّٰهِ | عَظِيْمٌ ⑮ | وَلَوْلَآ | اِذْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम समझ रहे थे उसे | मामूली | हालांकि वो | नज़्दीक | अल्लाह के | बहुत बड़ा था | और क्यों ना | जब |

| سَمِعْتُمُوْهُ | قُلْتُمْ | مَّا | يَكُوْنُ | لَنَآ | اَنْ | نَّتَكَلَّمَ | بِهٰذَا ۖ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सुना था तुमने उसे | कहा तुमने | नहीं | है | हमारे लिए | कि | हम कलाम करें | साथ इस (बात) के |

| سُبْحٰنَكَ | هٰذَا | بُهْتَانٌ | عَظِيْمٌ ⑯ | يَعِظُكُمُ | اللّٰهُ | اَنْ | تَعُوْدُوْا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पाक है तू | ये है | बोहतान | बहुत बड़ा | नसीहत करता है तुम्हें | अल्लाह | कि | (ना) तुम दोबारा करना |

| لِمِثْلِهٖٓ | اَبَدًا | اِنْ | كُنْتُمْ | مُّؤْمِنِيْنَ ⑰ ج | وَيُبَيِّنُ | اللّٰهُ | لَكُمُ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इस जैसा | कभी भी | अगर | हो तुम | ईमान लाने वाले | और बयान करता है | अल्लाह | तुम्हारे लिए |

| الْاٰيٰتِ ط | وَاللّٰهُ | عَلِيْمٌ | حَكِيْمٌ ⑱ | اِنَّ | الَّذِيْنَ | يُحِبُّوْنَ | اَنْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आयात को | और अल्लाह | ख़ूब इल्म वाला है | ख़ूब हिकमत वाला है | बेशक | वो लोग जो | पसंद करते हैं | कि |

| تَشِيْعَ | الْفَاحِشَةُ | فِى الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | لَهُمْ | عَذَابٌ | اَلِيْمٌ لا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फैले | बेहयाई | उन लोगों में जो | ईमान लाए | उनके लिए | अज़ाब है | दर्दनाक |

| فِى الدُّنْيَا | وَالْاٰخِرَةِ ط | وَاللّٰهُ | يَعْلَمُ | وَاَنْتُمْ | لَا تَعْلَمُوْنَ ⑲ |
|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया में | और आख़िरत में | और अल्लाह | जानता है | और तुम | नहीं तुम जानते |

| وَلَوْلَا | فَضْلُ | اللّٰهِ | عَلَيْكُمْ | وَرَحْمَتُهٗ | وَاَنَّ | اللّٰهَ | رَءُوْفٌ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अगर ना होता | फ़ज़्ल | अल्लाह का | तुम पर | और रहमत उसकी | और बेशक | अल्लाह | बहुत शफ़क़त करने वाला है |

| رَّحِيْمٌ ⑳ ع | يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | لَا تَتَّبِعُوْا | خُطُوٰتِ | الشَّيْطٰنِ ط |
|---|---|---|---|---|---|
| निहायत रहम करने वाला है | ऐ लोगो जो | ईमान लाए हो | ना तुम पैरवी करो | क़दमों की | शैतान के |

ع 2 10 8

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| وَمَنْ | يَّتَّبِعْ | خُطُوٰتِ | الشَّيْطٰنِ | فَاِنَّهٗ | يَاْمُرُ | بِالْفَحْشَآءِ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो कोई | पैरवी करेगा | क़दमों की | शैतान के | तो बेशक वो | वो हुक्म देता है | बेहयाई का |

| وَالْمُنْكَرِ ؕ | وَلَوْلَا | فَضْلُ | اللّٰهِ | عَلَيْكُمْ | وَرَحْمَتُهٗ | مَا | زَكٰى |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और बुराई का | और अगर ना होता | फ़ज़ल | अल्लाह का | तुम पर | और रहमत उसकी | ना | पाक हो सकता |

| مِنْكُمْ | مِّنْ اَحَدٍ | اَبَدًا ۙ | وَّلٰكِنَّ | اللّٰهَ | يُزَكِّيْ | مَنْ | يَّشَآءُ ؕ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम में से | कोई एक | कभी भी | और लेकिन | अल्लाह | वो पाक करता है | जिसे | वो चाहता है |

| وَاللّٰهُ | سَمِيْعٌ | عَلِيْمٌ ﴿21﴾ | وَلَا | يَاْتَلِ | اُولُوا | الْفَضْلِ | مِنْكُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और अल्लाह | ख़ूब सुनने वाला है | ख़ूब इल्म वाला है | और ना | क़सम खाऐं | साहिबे | फ़ज़्ल | तुम में से |

| وَالسَّعَةِ | اَنْ | يُّؤْتُوْٓا | اُولِي الْقُرْبٰى | وَالْمَسٰكِيْنَ | وَالْمُهٰجِرِيْنَ |
|---|---|---|---|---|---|
| और वुसअत वाले | कि | (ना) वो देंगे | रिश्तेदारों | और मिस्कीनों | और मुहाजिरीन को |

| فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ | وَلْيَعْفُوْا | وَلْيَصْفَحُوْا ؕ | اَلَا | تُحِبُّوْنَ | اَنْ |
|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के रास्ते में | और चाहिए कि वो माफ़ कर दें | और चाहिए कि वो दरगुज़र करें | क्या नहीं | तुम पसंद करते | कि |

| يَّغْفِرَ | اللّٰهُ | لَكُمْ ؕ | وَاللّٰهُ | غَفُوْرٌ | رَّحِيْمٌ ﴿22﴾ | اِنَّ | الَّذِيْنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| माफ़ कर दे | अल्लाह | तुम्हें | और अल्लाह | बहुत बख़्शने वाला है | निहायत रहम करने वाला है | बेशक | वो जो |

| يَرْمُوْنَ | الْمُحْصَنٰتِ | الْغٰفِلٰتِ | الْمُؤْمِنٰتِ | لُعِنُوْا | فِي الدُّنْيَا |
|---|---|---|---|---|---|
| तोहमत लगाते हैं | पाक दामन | बेख़बर/भोली-भाली | मोमिन औरतों पर | वो लानत किए गए | दुनिया में |

| وَالْاٰخِرَةِ ۘ | وَلَهُمْ | عَذَابٌ | عَظِيْمٌ ﴿23﴾ | يَّوْمَ | تَشْهَدُ | عَلَيْهِمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और आख़िरत में | और उनके लिए | अज़ाब है | बहुत बड़ा | जिस दिन | गवाही देंगी | उन पर |

| اَلْسِنَتُهُمْ | وَاَيْدِيْهِمْ | وَاَرْجُلُهُمْ | بِمَا | كَانُوْا | يَعْمَلُوْنَ ﴿24﴾ |
|---|---|---|---|---|---|
| ज़बानें उनकी | और हाथ उनके | और पांव उनके | उसकी जो | थे वो | वो अमल करते |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَوْمَئِذٍ | يُّوَفِّيْهِمُ | اللّٰهُ | دِيْنَهُمُ | الْحَقَّ | وَيَعْلَمُوْنَ | اَنَّ | اللّٰهَ |
| उस दिन | पूरा-पूरा देगा उन्हें | अल्लाह | बदला उनका | दुरुस्त | और वो जान लेंगे | बेशक | अल्लाह |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| هُوَ | الْحَقُّ | الْمُبِيْنُ ﴿25﴾ | اَلْخَبِيْثٰتُ | لِلْخَبِيْثِيْنَ | وَالْخَبِيْثُوْنَ |
| वो ही | हक़ है | ज़ाहिर करने वाला है | ख़बीस औरतें हैं | ख़बीस मर्दों के लिए | और ख़बीस मर्द हैं |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ | وَالطَّيِّبٰتُ | لِلطَّيِّبِيْنَ | وَالطَّيِّبُوْنَ | لِلطَّيِّبٰتِ ۚ | اُولٰٓئِكَ |
| ख़बीस औरतों के लिए | और पाकीज़ा औरतें हैं | पाकीज़ा मर्दों के लिए | और पाकीज़ा मर्द हैं | पाकीज़ा औरतों के लिए | यही लोग हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُبَرَّءُوْنَ | مِمَّا | يَقُوْلُوْنَ ؕ | لَهُمْ | مَّغْفِرَةٌ | وَّرِزْقٌ | كَرِيْمٌ ﴿26﴾ ع |
| मुबर्रा/पाक | उससे जो | वो कहते हैं | उनके लिए | बख़्शिश है | और रिज़्क़ है | इज़्ज़त वाला |

ع 3 6 9

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | لَا تَدْخُلُوْا | بُيُوْتًا | غَيْرَ | بُيُوْتِكُمْ | حَتّٰى |
| ऐ लोगो जो | ईमान लाए हो | ना तुम दाख़िल हो | घरों में | सिवाए | अपने घरों के | यहां तक कि |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَسْتَاْنِسُوْا | وَتُسَلِّمُوْا | عَلٰٓى | اَهْلِهَا ؕ | ذٰلِكُمْ | خَيْرٌ | لَّكُمْ |
| तुम उन्स हासिल कर लो | और तुम सलाम करो | ऊपर | उसके रहने वालों के | ये बात | बेहतर है | तुम्हारे लिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَعَلَّكُمْ | تَذَكَّرُوْنَ ﴿27﴾ | فَاِنْ | لَّمْ | تَجِدُوْا | فِيْهَآ | اَحَدًا | فَلَا |
| ताकि तुम | तुम नसीहत पकड़ो | फिर अगर | ना | तुम पाओ | उनमें | किसी एक को | तो ना |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَدْخُلُوْهَا | حَتّٰى | يُؤْذَنَ | لَكُمْ ۚ | وَاِنْ | قِيْلَ | لَكُمُ | ارْجِعُوْا |
| तुम दाख़िल हो उनमें | यहां तक कि | इजाज़त दे दी जाए | तुम्हें | और अगर | कहा जाए | तुम्हें | वापस जाओ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَارْجِعُوْا | هُوَ | اَزْكٰى | لَكُمْ ؕ | وَاللّٰهُ | بِمَا | تَعْمَلُوْنَ | عَلِيْمٌ ﴿28﴾ |
| तो वापस चले जाओ | वो | ज़्यादा पाकीज़ा है | तुम्हारे लिए | और अल्लाह | उसे जो | तुम अमल करते हो | ख़ूब जानने वाला है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَيْسَ | عَلَيْكُمْ | جُنَاحٌ | اَنْ | تَدْخُلُوْا | بُيُوْتًا | غَيْرَ | مَسْكُوْنَةٍ |
| नहीं है | तुम पर | कोई गुनाह | कि | तुम दाख़िल हो | घरों में | ग़ैर | रिहाईशी |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فِيْهَا | مَتَاعٌ | لَّكُمْ ؕ | وَاللّٰهُ | يَعْلَمُ | مَا | تُبْدُوْنَ | وَمَا |
| जिनमें | फ़ायदा है | तुम्हारे लिए | और अल्लाह | जानता है | जो कुछ | तुम ज़ाहिर करते हो | और जो कुछ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تَكْتُمُوْنَ ﴿29﴾ | قُلْ | لِّلْمُؤْمِنِيْنَ | يَغُضُّوْا | مِنْ اَبْصَارِهِمْ | وَيَحْفَظُوْا |
| तुम छुपाते हो | कह दीजिए | मोमिन मर्दों से | वो पस्त रखें | अपनी निगाहों में से | और वो हिफ़ाज़त करें |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فُرُوْجَهُمْ ؕ | ذٰلِكَ | اَزْكٰى | لَهُمْ ؕ | اِنَّ | اللّٰهَ | خَبِيْرٌۢ | بِمَا |
| अपनी शर्मगाहों की | ये | ज़्यादा पाकीज़ा है | उनके लिए | बेशक | अल्लाह | ख़ूब ख़बर रखने वाला है | उसकी जो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَصْنَعُوْنَ ﴿30﴾ | وَقُلْ | لِّلْمُؤْمِنٰتِ | يَغْضُضْنَ | مِنْ اَبْصَارِهِنَّ | وَيَحْفَظْنَ |
| वो करते हैं | और कह दीजिए | मोमिन औरतों से | वो पस्त रखें | अपनी निगाहों में से | और वो हिफ़ाज़त करें |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فُرُوْجَهُنَّ | وَلَا | يُبْدِيْنَ | زِيْنَتَهُنَّ | اِلَّا | مَا | ظَهَرَ | مِنْهَا |
| अपनी शर्मगाहों की | और ना | वो ज़ाहिर करें | ज़ीनत अपनी | मगर | जो | ज़ाहिर हो जाए | उसमें से |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَلْيَضْرِبْنَ | بِخُمُرِهِنَّ | عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۖ | وَلَا | يُبْدِيْنَ | زِيْنَتَهُنَّ |
| और वो ज़रूर डालें | ओढ़नियां अपनी | अपने गिरेबानों पर | और ना | वो ज़ाहिर करें | ज़ीनत अपनी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَّا | لِبُعُوْلَتِهِنَّ | اَوْ | اٰبَآئِهِنَّ | اَوْ | اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ | اَوْ |
| मगर | वास्ते अपने शौहरों के | या | अपने बापों के | या | अपने शौहरों के बापों के | या |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَبْنَآئِهِنَّ | اَوْ | اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ | اَوْ | اِخْوَانِهِنَّ | اَوْ | بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ |
| अपने बेटों के | या | अपने शौहरों के बेटों के | या | अपने भाईयों के | या | अपने भाईयों के बेटों के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَوْ | بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ | اَوْ | نِسَآئِهِنَّ | اَوْ | مَا | مَلَكَتْ | اَيْمَانُهُنَّ |
| या | अपनी बहनों के बेटों के | या | अपनी औरतों के | या | जिनके | मालिक हुए | उनके दाएं हाथ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَوِ | التّٰبِعِيْنَ | غَيْرِ | اُولِى | الْاِرْبَةِ | مِنَ الرِّجَالِ | اَوِ | الطِّفْلِ |
| या | ज़ेरेदस्त | ना | रखने वाले | हाजत/ख़्वाहिश | मर्दों में से | या | लड़के |

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْنَ | لَمْ | يَظْهَرُوْا | عَلٰى عَوْرٰتِ | النِّسَآءِ ۪ | وَلَا | يَضْرِبْنَ |
| वो जो | नहीं | वो वाक़िफ़ हुए | छुपी बातों पर | औरतों की | और ना | वो मारें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِاَرْجُلِهِنَّ | لِيُعْلَمَ | مَا | يُخْفِيْنَ | مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ | وَتُوْبُوْٓا | اِلَى اللّٰهِ |
| पांव अपने | कि जान लिया जाए | जो | वो छुपाती हैं | अपनी ज़ीनत में से | और तौबा करो | तरफ़ अल्लाह के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| جَمِيْعًا | اَيُّهَ | الْمُؤْمِنُوْنَ | لَعَلَّكُمْ | تُفْلِحُوْنَ ﴿31﴾ | وَاَنْكِحُوا | الْاَيَامٰى |
| सब के सब | ऐ | मोमिनो | ताकि तुम | तुम फ़लाह पाओ | और निकाह कर दो | बेनिकाहों का |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْكُمْ | وَالصّٰلِحِيْنَ | مِنْ عِبَادِكُمْ | وَاِمَآئِكُمْ ؕ | اِنْ | يَّكُوْنُوْا | فُقَرَآءَ |
| तुम में से | और जो नेक हों | तुम्हारे ग़ुलामों में से | और तुम्हारी लौंडियों में से | अगर | होंगे वो | मोहताज |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يُغْنِهِمُ | اللّٰهُ | مِنْ فَضْلِهٖ ؕ | وَاللّٰهُ | وَاسِعٌ | عَلِيْمٌ ﴿32﴾ |
| ग़नी कर देगा उन्हें | अल्लाह | अपने फ़ज़्ल से | और अल्लाह | ख़ूब वुसअत वाला है | ख़ूब इल्म वाला है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَلْيَسْتَعْفِفِ | الَّذِيْنَ | لَا يَجِدُوْنَ | نِكَاحًا | حَتّٰى | يُغْنِيَهُمُ |
| और ज़रूर पाक दामनी इख़्तियार करें | वो जो | नहीं वो पाते (वुसअत) | निकाह की | यहां तक कि | ग़नी कर दे उन्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهُ | مِنْ فَضْلِهٖ ؕ | وَالَّذِيْنَ | يَبْتَغُوْنَ | الْكِتٰبَ | مِمَّا | مَلَكَتْ |
| अल्लाह | अपने फ़ज़्ल से | और वो जो | चाहते हों | मुकातबत/आज़ादी की तहरीर | उनमें से जिनके | मालिक हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَيْمَانُكُمْ | فَكَاتِبُوْهُمْ | اِنْ | عَلِمْتُمْ | فِيْهِمْ | خَيْرًا ۖ | وَّاٰتُوْهُمْ |
| दायें हाथ तुम्हारे | तो मुकातबत कर लो उनसे | अगर | जानो तुम | उनमें | कोई भलाई | और दो उन्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْ مَّالِ | اللّٰهِ | الَّذِيْٓ | اٰتٰىكُمْ ؕ | وَلَا | تُكْرِهُوْا | فَتَيٰتِكُمْ |
| माल से | अल्लाह के | वो जो | उसने दिया है तुम्हें | और ना | तुम मजबूर करो | अपनी बांदियों को |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَى الْبِغَآءِ | اِنْ | اَرَدْنَ | تَحَصُّنًا | لِّتَبْتَغُوْا | عَرَضَ | الْحَيٰوةِ | الدُّنْيَا ؕ |
| बदकारी पर | अगर | वो चाहें | पाकदामनी | ताकि तुम तलाश करो | सामान | ज़िंदगी का | दुनिया की |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَنْ | يُّكْرِهْهُّنَّ | فَاِنَّ | اللّٰهَ | مِنْۢ بَعْدِ | اِكْرَاهِهِنَّ | غَفُوْرٌ |
| और जो कोई | मजबूर करेगा उन्हें | तो बेशक | अल्लाह | बाद | उनको मजबूर करने के | बहुत बख़्शने वाला है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| رَّحِيْمٌ ﴿33﴾ | وَلَقَدْ | اَنْزَلْنَآ | اِلَيْكُمْ | اٰيٰتٍ | مُّبَيِّنٰتٍ | وَّمَثَلًا |
| निहायत रहम करने वाला है | और अलबत्ता तहक़ीक़ | नाज़िल कीं हमने | तरफ़ तुम्हारे | आयात | वाज़ेह | और मिसाल |

ع 4 8 10

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنَ الَّذِيْنَ | خَلَوْا | مِنْ قَبْلِكُمْ | وَمَوْعِظَةً | لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿34﴾ ع | اَللّٰهُ | نُوْرُ |
| उन लोगों की जो | गुज़र चुके | तुमसे पहले | और नसीहत | मुत्तक़ी लोगों के लिए | अल्लाह | नूर है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضِ ؕ | مَثَلُ | نُوْرِهٖ | كَمِشْكٰوةٍ | فِيْهَا | مِصْبَاحٌ ؕ |
| आसमानों | और ज़मीन का | मिसाल | उसके नूर की | मानिंद ताक़ के | जिसमें | एक चिराग़ है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَلْمِصْبَاحُ | فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ | اَلزُّجَاجَةُ | كَاَنَّهَا | كَوْكَبٌ | دُرِّيٌّ | يُّوْقَدُ |
| वो चिराग़ | शीशे में है | वो शीशा | गोया कि वो | तारा है | चमकता हुआ | जो रोशन किया जाता है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ شَجَرَةٍ | مُّبٰرَكَةٍ | زَيْتُوْنَةٍ | لَّا شَرْقِيَّةٍ | وَّلَا | غَرْبِيَّةٍ ۙ | يَّكَادُ |
| एक दरख़्त से | बाबरकत | ज़ैतून के | ना मशरिक़ी है | और ना | मग़रिबी | क़रीब है कि |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| زَيْتُهَا | يُضِيْٓءُ | وَلَوْ | لَمْ | تَمْسَسْهُ | نَارٌ ؕ | نُوْرٌ | عَلٰى نُوْرٍ ؕ |
| तेल उसका | वो रोशन हो जाए | और अगरचे | ना | छुए उसे | कोई आग | नूर है | ऊपर नूर के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَهْدِى | اللّٰهُ | لِنُوْرِهٖ | مَنْ | يَّشَآءُ ؕ | وَيَضْرِبُ | اللّٰهُ | الْاَمْثَالَ |
| रहनुमाई करता है | अल्लाह | अपने नूर के लिए | जिसकी | वो चाहता है | और बयान करता है | अल्लाह | मिसालें |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لِلنَّاسِ ؕ | وَاللّٰهُ | بِكُلِّ | شَيْءٍ | عَلِيْمٌ ﴿35﴾ ۙ | فِيْ بُيُوْتٍ | اَذِنَ | اللّٰهُ |
| लोगों के लिए | और अल्लाह | हर | चीज़ को | ख़ूब जानने वाला है | घरों में | हुक्म दिया | अल्लाह ने |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْ | تُرْفَعَ | وَيُذْكَرَ | فِيْهَا | اسْمُهٗ ۙ | يُسَبِّحُ | لَهٗ | فِيْهَا | بِالْغُدُوِّ |
| कि | बुलंद किया जाए | और ज़िक्र किया जाए | उनमें | नाम उसका | वो तस्बीह करते हैं | उसकी | उनमें | सुबह |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATIO

| وَالْاٰصَالِ ﴿36﴾ | رِجَالٌ ۙ | لَّا تُلْهِيْهِمْ | تِجَارَةٌ | وَّلَا | بَيْعٌ | عَنْ ذِكْرِ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और शाम | वो मर्द | नहीं ग़ाफ़िल करती उन्हें | तिजारत | और ना | ख़रीदो फ़रोख़्त | ज़िक्र से |

| اللّٰهِ | وَاِقَامِ | الصَّلٰوةِ | وَاِيْتَآءِ | الزَّكٰوةِ ۙ | يَخَافُوْنَ | يَوْمًا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के | और क़ायम करने से | नमाज़ के | और अदा करने से | ज़कात के | वो डरते हैं | उस दिन से |

| تَتَقَلَّبُ | فِيْهِ | الْقُلُوْبُ | وَالْاَبْصَارُ ﴿37﴾ | لِيَجْزِيَهُمُ | اللّٰهُ | اَحْسَنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उलट-पुलट हो जाऐंगे | जिसमें | दिल | और निगाहें | ताकि बदला दे उन्हें | अल्लाह | बेहतरीन |

| مَا | عَمِلُوْا | وَيَزِيْدَهُمْ | مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ | وَاللّٰهُ | يَرْزُقُ | مَنْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उसका जो | उन्होंने अमल किए | और वो ज़्यादा दे उन्हें | अपने फ़ज़्ल से | और अल्लाह | वो रिज़्क़ देता है | जिसे |

| يَّشَآءُ | بِغَيْرِ | حِسَابٍ ﴿38﴾ | وَالَّذِيْنَ | كَفَرُوْٓا | اَعْمَالُهُمْ | كَسَرَابٍ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वो चाहता है | बग़ैर | हिसाब के | और वो जिन्होंने | कुफ़्र किया | आमाल उनके | मानिंद सराब के हैं |

| بِقِيْعَةٍ | يَّحْسَبُهُ | الظَّمْاٰنُ | مَآءً ؕ | حَتّٰٓى | اِذَا | جَآءَهٗ | لَمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चटियल मैदान में | समझता है उसे | सख़्त प्यासा | पानी | यहां तक कि | जब | वो आता है उसके पास | नहीं |

| يَجِدْهُ | شَيْـًٔا | وَّوَجَدَ | اللّٰهَ | عِنْدَهٗ | فَوَفّٰىهُ | حِسَابَهٗ ؕ | وَاللّٰهُ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वो पाता उसे | कुछ भी | और पाता है | अल्लाह को | अपने पास | फिर वो पूरा-पूरा देता है उसे | हिसाब उसका | और अल्लाह |

| سَرِيْعُ | الْحِسَابِ ﴿39﴾ | اَوْ | كَظُلُمٰتٍ | فِيْ بَحْرٍ | لُّجِّيٍّ | يَّغْشٰىهُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जल्द लेने वाला है | हिसाब | या | मानिंद अंधेरों के | समुन्दर में | निहायत गहरे | ढाप लेती है उसे |

| مَوْجٌ | مِّنْ فَوْقِهٖ | مَوْجٌ | مِّنْ فَوْقِهٖ | سَحَابٌ ؕ | ظُلُمٰتٌۢ | بَعْضُهَا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मौज | उसके ऊपर से | एक (और) मौज | उसके ऊपर से | बादल | अंधेरे हैं | बाज़ उनके |

| فَوْقَ | بَعْضٍ ؕ | اِذَآ | اَخْرَجَ | يَدَهٗ | لَمْ | يَكَدْ | يَرٰىهَا ؕ | وَمَنْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ऊपर हैं | बाज़ के | जब | वो निकाले | हाथ अपना | नहीं | वो क़रीब कि | वो देख सके उसे | और वो जो |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 5 6 11

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَلَمْ | مِنْ نُّوْرٍ (40) ع | لَهٗ | فَمَا | نُوْرًا | لَهٗ | اللّٰهُ | يَجْعَلِ | لَّمْ |
| क्या नहीं | कोई नूर | उसके लिए | तो नहीं | कोई नूर | उसके लिए | अल्लाह ने | बनाया | नहीं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالْاَرْضِ | فِى السَّمٰوٰتِ | مَنْ | لَهٗ | يُسَبِّحُ | اللّٰهَ | اَنَّ | تَرَ |
| और ज़मीन में है | आसमानों में | जो कोई | उसके लिए | तस्बीह करता है | अल्लाह | कि बेशक | आपने देखा |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاللّٰهُ | وَتَسْبِيْحَهٗ ط | صَلَاتَهٗ | عَلِمَ | قَدْ | كُلٌّ | صٰٓفّٰتٍ ط | وَالطَّيْرُ |
| और अल्लाह | और तस्बीह अपनी | नमाज़ अपनी | जान ली है | तहक़ीक़ | हर एक ने | पर फैलाए | और परिंदे (भी) |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالْاَرْضِ ج | السَّمٰوٰتِ | مُلْكُ | وَلِلّٰهِ | يَفْعَلُوْنَ (41) | بِمَا | عَلِيْمٌۢ |
| और ज़मीन की | आसमानों | बादशाहत | और अल्लाह ही के लिए है | वो कर रहे हैं | उसे जो | ख़ूब जानने वाला है |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ثُمَّ | سَحَابًا | يُزْجِىْ | اللّٰهَ | اَنَّ | تَرَ | اَلَمْ | الْمَصِيْرُ (42) | وَاِلَى اللّٰهِ |
| फिर | बादल को | वो चलाता है | अल्लाह | कि बेशक | आपने देखा | क्या नहीं | लौटना है | और अल्लाह ही की तरफ़ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَخْرُجُ | الْوَدْقَ | فَتَرَى | رُكَامًا | يَجْعَلُهٗ | ثُمَّ | بَيْنَهٗ | يُؤَلِّفُ |
| निकलती है | बारिश | तो आप देखते हैं | तह-ब-तह | वो कर देता है उसे | फिर | आपस में | वो मिला देता है (उन्हें) |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ بَرَدٍ | فِيْهَا | مِنْ جِبَالٍ | مِنَ السَّمَآءِ | وَيُنَزِّلُ | مِنْ خِلٰلِهٖ ج |
| कुछ ओले | उसमें | पहाड़ों से | आसमान से | और वो उतारता है | उसके दर्मियान से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَكَادُ | يَّشَآءُ ط | عَنْ مَّنْ | وَيَصْرِفُهٗ | يَّشَآءُ | مَنْ | بِهٖ | فَيُصِيْبُ |
| क़रीब है कि | वो चाहता है | जिससे | और वो फेर देता है उसे | वो चाहता है | जिसे | उसे | फिर वो पहुंचाता है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَالنَّهَارَ ط | الَّيْلَ | اللّٰهُ | يُقَلِّبُ | بِالْاَبْصَارِ (43) | يَذْهَبُ | بَرْقِهٖ | سَنَا |
| और दिन को | रात | अल्लाह | उलट-पुलट करता है | निगाहों को | वो ले जाए | उसकी बिजली की | चमक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كُلَّ | خَلَقَ | وَاللّٰهُ | لِّاُولِى الْاَبْصَارِ (44) | لَعِبْرَةً | فِىْ ذٰلِكَ | اِنَّ |
| हर | पैदा किया | और अल्लाह ने | अहले बसीरत के लिए | अलबत्ता इबरत है | इसमें | यक़ीनन |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| دَآبَّةٍ | مِّنْ مَّآءٍ ۚ | فَمِنْهُمْ | مَّنْ | يَّمْشِيْ | عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ | وَمِنْهُمْ |
| जानदार को | पानी से | तो उनमें से कोई है | जो | चलता है | अपने पेट पर | और उनमें से कोई है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مَّنْ | يَّمْشِيْ | عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ | وَمِنْهُمْ | مَّنْ | يَّمْشِيْ | عَلٰٓى اَرْبَعٍ ؕ |
| जो | चलता है | दो पांव पर | और उनमें से कोई है | जो | चलता है | चार (पांव) पर |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَخْلُقُ | اللّٰهُ | مَا | يَشَآءُ ؕ | اِنَّ | اللّٰهَ | عَلٰى | كُلِّ | شَيْءٍ |
| पैदा करता है | अल्लाह | जो | वो चाहता है | बेशक | अल्लाह | ऊपर | हर | चीज़ के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قَدِيْرٌ ﴿45﴾ | لَقَدْ | اَنْزَلْنَآ | اٰيٰتٍ | مُّبَيِّنٰتٍ ؕ | وَاللّٰهُ | يَهْدِيْ |
| ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है | अलबत्ता तहक़ीक़ | नाज़िल कीं हमने | आयात | वाज़ेह | और अल्लाह | वो हिदायत देता है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مَنْ | يَّشَآءُ | اِلٰى صِرَاطٍ | مُّسْتَقِيْمٍ ﴿46﴾ | وَيَقُوْلُوْنَ | اٰمَنَّا | بِاللّٰهِ |
| जिसे | वो चाहता है | तरफ़ रास्ते | सीधे के | और वो कहते हैं | ईमान लाए हम | अल्लाह पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَبِالرَّسُوْلِ | وَاَطَعْنَا | ثُمَّ | يَتَوَلّٰى | فَرِيْقٌ | مِّنْهُمْ | مِّنْۢ بَعْدِ |
| और रसूल पर | और इताअत की हमने | फिर | मुंह फेर लेता है | एक गिरोह | उनमें से | बाद |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ذٰلِكَ ؕ | وَمَآ | اُولٰٓئِكَ | بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿47﴾ | وَاِذَا | دُعُوْٓا | اِلَى اللّٰهِ |
| इसके | और नहीं | ये लोग | ईमान लाने वाले | और जब | वो बुलाए जाते हैं | तरफ़ अल्लाह के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَرَسُوْلِهٖ | لِيَحْكُمَ | بَيْنَهُمْ | اِذَا | فَرِيْقٌ | مِّنْهُمْ | مُّعْرِضُوْنَ ﴿48﴾ |
| और उसके रसूल के | ताकि वो फ़ैसला करे | दर्मियान उनके | तब | एक गिरोह (के लोग) | उनमें से | ऐराज़ करने वाले होते हैं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاِنْ | يَّكُنْ | لَّهُمُ | الْحَقُّ | يَاْتُوْٓا | اِلَيْهِ | مُذْعِنِيْنَ ﴿49﴾ ؕ | اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ |
| और अगर | हो | उनके लिए | हक़ | वो आते हैं | तरफ़ उसके | मुतीअ हो कर | क्या उनके दिलों में |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَّرَضٌ | اَمِ | ارْتَابُوْٓا | اَمْ | يَخَافُوْنَ | اَنْ | يَّحِيْفَ | اللّٰهُ | عَلَيْهِمْ |
| कोई बीमारी है | या | वो शक में पड़ गए हैं | या | वो डरते हैं | कि | ज़ुल्म करेगा | अल्लाह | उन पर |

AL-HUDA INTERNATIONAL FOUNDATION WEBSITE

ع 6 10 12

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَ رَسُوْلُهٗ ط | بَلْ | اُولٰٓئِكَ | هُمُ | الظّٰلِمُوْنَ (50) ع | اِنَّمَا | كَانَ | قَوْلَ |
| और उसका रसूल | बल्कि | यही लोग हैं | वो | जो ज़ालिम हैं | बेशक | है | क़ौल |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمُؤْمِنِيْنَ | اِذَا | دُعُوْٓا | اِلَى اللّٰهِ | وَ رَسُوْلِهٖ | لِيَحْكُمَ | بَيْنَهُمْ |
| मोमिनों का | जब | वो बुलाए जाते हैं | तरफ़ अल्लाह के | और उसके रसूल के | कि वो फ़ैसला करे | दर्मियान उनके |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْ | يَّقُوْلُوْا | سَمِعْنَا | وَ اَطَعْنَا ط | وَ اُولٰٓئِكَ | هُمُ | الْمُفْلِحُوْنَ (51) |
| कि | वो कहते हैं | सुन लिया हमने | और इताअत की हमने | और यही लोग हैं | वो | जो फ़लाह पाने वाले हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَ مَنْ | يُّطِعِ | اللّٰهَ | وَ رَسُوْلَهٗ | وَ يَخْشَ | اللّٰهَ | وَ يَتَّقْهِ |
| और जो कोई | इताअत करेगा | अल्लाह की | और उसके रसूल की | और वो डरेगा | अल्लाह से | और तक़वा करेगा उससे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاُولٰٓئِكَ | هُمُ | الْفَآئِزُوْنَ (52) | وَ اَقْسَمُوْا | بِاللّٰهِ | جَهْدَ | اَيْمَانِهِمْ |
| तो यही लोग हैं | वो | जो कामयाब होने वाले हैं | और उन्होंने क़समें खाईं | अल्लाह की | पक्की/पुख़्ता | क़समें अपनी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَئِنْ | اَمَرْتَهُمْ | لَيَخْرُجُنَّ ط | قُلْ | لَّا تُقْسِمُوْا ج | طَاعَةٌ | مَّعْرُوْفَةٌ ط |
| अलबत्ता अगर | हुक्म दिया आपने उन्हें | अलबत्ता वो ज़रूर निकलेंगे | कह दीजिए | ना तुम क़समें खाओ | इताअत तो | जानी पहचानी है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّ | اللّٰهَ | خَبِيْرٌۢ | بِمَا | تَعْمَلُوْنَ (53) | قُلْ | اَطِيْعُوا | اللّٰهَ |
| बेशक | अल्लाह | ख़ूब ख़बर रखने वाला है | उसकी जो | तुम अमल करते हो | कह दीजिए | इताअत करो | अल्लाह की |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَ اَطِيْعُوا | الرَّسُوْلَ ج | فَاِنْ | تَوَلَّوْا | فَاِنَّمَا | عَلَيْهِ | مَا | حُمِّلَ |
| और इताअत करो | रसूल की | फिर अगर | तुम मुंह फेरोगे | तो बेशक | उस (रसूल) पर है | जो | बोझ वो डाला गया |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَ عَلَيْكُمْ | مَّا | حُمِّلْتُمْ ط | وَ اِنْ | تُطِيْعُوْهُ | تَهْتَدُوْا ط | وَ مَا |
| और तुम पर है | जो | बोझ डाले गए तुम | और अगर | तुम इताअत करोगे उसकी | तुम हिदायत पा लोगे | और नहीं है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَى الرَّسُوْلِ | اِلَّا | الْبَلٰغُ | الْمُبِيْنُ (54) | وَعَدَ | اللّٰهُ | الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا |
| रसूल पर | मगर | पहुंचा देना | खुल्लम-खुल्ला | वादा किया | अल्लाह ने | उन लोगों से जो | ईमान लाए |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنْكُمْ | وَعَمِلُوا | الصّٰلِحٰتِ | لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ | فِي الْاَرْضِ | كَمَا |
| तुम में से | और उन्होंने अमल किए | नेक | अलबत्ता वो ज़रूर जानशीन बनाएगा उन्हें | ज़मीन में | जैसा कि |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اسْتَخْلَفَ | الَّذِيْنَ | مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ | وَلَيُمَكِّنَنَّ | لَهُمْ | دِيْنَهُمُ |
| उसने जानशीन बनाया था | उन्हें जो | उनसे पहले थे | और अलबत्ता वो ज़रूर जमा देगा | उनके लिए | दीन उनका |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِي | ارْتَضٰى | لَهُمْ | وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ | مِّنْۢ بَعْدِ | خَوْفِهِمْ |
| वो जो | उसने पसंद किया है | उनके लिए | और अलबत्ता वो ज़रूर बदल कर देगा उन्हें | बाद | उनके ख़ौफ़ के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَمْنًا ؕ | يَعْبُدُوْنَنِيْ | لَا يُشْرِكُوْنَ | بِيْ | شَيْـًٔا ؕ | وَمَنْ | كَفَرَ | بَعْدَ |
| अमन | वो इबादत करेंगे मेरी | ना वो शरीक करेंगे | मेरे साथ | किसी चीज़ को | और जो कोई | कुफ़्र करे | बाद |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ذٰلِكَ | فَاُولٰٓئِكَ | هُمُ | الْفٰسِقُوْنَ ﴿55﴾ | وَاَقِيْمُوا | الصَّلٰوةَ | وَاٰتُوا | الزَّكٰوةَ |
| इसके | तो यही लोग हैं | वो | जो फ़ासिक़ हैं | और क़ायम करो | नमाज़ | और अदा करो | ज़कात |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَاَطِيْعُوا | الرَّسُوْلَ | لَعَلَّكُمْ | تُرْحَمُوْنَ ﴿56﴾ | لَا تَحْسَبَنَّ | الَّذِيْنَ |
| और इताअत करो | रसूल की | ताकि तुम | तुम रहम किए जाओ | हरगिज़ ना समझिए आप | उनको जिन्होंने |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| كَفَرُوْا | مُعْجِزِيْنَ | فِي الْاَرْضِ ۚ | وَمَاْوٰىهُمُ | النَّارُ ؕ | وَلَبِئْسَ |
| कुफ़्र किया | कि वो आजिज़ करने वाले हैं | ज़मीन में | और ठिकाना उनका | आग है | और यक़ीनन कितनी बुरी है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمَصِيْرُ ﴿57﴾ ع | يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | لِيَسْتَاْذِنْكُمُ | الَّذِيْنَ | مَلَكَتْ | ع 7 7 13 |
| लौटने की जगह | ऐ लोगो जो | ईमान लाए हो | चाहिए कि इजाज़त तलब करें तुमसे | वो लोग जिनके | मालिक हुए | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَيْمَانُكُمْ | وَالَّذِيْنَ | لَمْ | يَبْلُغُوا | الْحُلُمَ | مِنْكُمْ | ثَلٰثَ |
| दाऐं हाथ तुम्हारे | और वो जो | नहीं | वो पहुंचे | बुलूग़त को | तुम में से | तीन |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مَرّٰتٍ ؕ | مِنْ قَبْلِ | صَلٰوةِ | الْفَجْرِ | وَحِيْنَ | تَضَعُوْنَ | ثِيَابَكُمْ |
| बार | पहले | नमाज़े | फ़ज्र से | और जिस वक़्त | तुम उतार रखते हो | कपड़े अपने |

INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION AL-HUDA

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِّنَ الظَّهِيْرَةِ | وَمِنْۢ بَعْدِ | صَلٰوةِ | الْعِشَآءِ ۗ | ثَلٰثُ | عَوْرٰتٍ |
| दोपहर के वक़्त | और बाद | नमाज़े | इशा के | तीन | पर्दे के (वक़्त हैं) |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَّكُمْ ؕ | لَيْسَ | عَلَيْكُمْ | وَلَا | عَلَيْهِمْ | جُنَاحٌۢ | بَعْدَهُنَّ ؕ |
| तुम्हारे लिए | नहीं | तुम पर | और ना | उन पर | कोई गुनाह | बाद इन (औक़ात) के |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| طَوّٰفُوْنَ | عَلَيْكُمْ | بَعْضُكُمْ | عَلٰى بَعْضٍ ؕ | كَذٰلِكَ | يُبَيِّنُ |
| बकसरत आने-जाने वाले हैं | तुम पर | बाज़ तुम्हारे | बाज़ पर | इसी तरह | वाज़ेह करता है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهُ | لَكُمُ | الْاٰيٰتِ ؕ | وَاللّٰهُ | عَلِيْمٌ | حَكِيْمٌ ﴿58﴾ | وَاِذَا | بَلَغَ |
| अल्लाह | तुम्हारे लिए | आयात | और अल्लाह | ख़ूब इल्म वाला है | ख़ूब हिक्मत वाला है | और जब | पहुंच जाऐं |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْاَطْفَالُ | مِنْكُمُ | الْحُلُمَ | فَلْيَسْتَاْذِنُوْا | كَمَا | اسْتَاْذَنَ | الَّذِيْنَ |
| बच्चे | तुम में से | बुलूग़त को | पस चाहिए कि वो इजाज़त लिया करें | जैसा कि | इजाज़त लेते थे | वो लोग जो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ | كَذٰلِكَ | يُبَيِّنُ | اللّٰهُ | لَكُمْ | اٰيٰتِهٖ ؕ | وَاللّٰهُ |
| इनसे पहले थे | इसी तरह | वाज़ेह करता है | अल्लाह | तुम्हारे लिए | अपनी आयात को | और अल्लाह |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَلِيْمٌ | حَكِيْمٌ ﴿59﴾ | وَالْقَوَاعِدُ | مِنَ النِّسَآءِ | الّٰتِيْ | لَا يَرْجُوْنَ |
| ख़ूब इल्म वाला है | ख़ूब हिक्मत वाला है | और बैठ रहने वालियां | औरतों में से | वो जो | नहीं वो उम्मीद रखतीं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| نِكَاحًا | فَلَيْسَ | عَلَيْهِنَّ | جُنَاحٌ | اَنْ | يَّضَعْنَ | ثِيَابَهُنَّ | غَيْرَ |
| निकाह की | तो नहीं है | उन पर | कोई गुनाह | कि | वो उतार रखें | कपड़े (हिजाब) अपने | ना |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُتَبَرِّجٰتٍۭ | بِزِيْنَةٍ ؕ | وَاَنْ | يَّسْتَعْفِفْنَ | خَيْرٌ | لَّهُنَّ ؕ | وَاللّٰهُ |
| ज़ाहिर करने वालियां | ज़ीनत को | और ये कि | वो एहतियात बरतें | बेहतर है | उनके लिए | और अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سَمِيْعٌ | عَلِيْمٌ ﴿60﴾ | لَيْسَ | عَلَى الْاَعْمٰى | حَرَجٌ | وَّلَا | عَلَى الْاَعْرَجِ |
| ख़ूब सुनने वाला है | ख़ूब जानने वाला है | नहीं है | अंधे पर | कोई हर्ज/गुनाह | और ना | लंगड़े पर |

INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| حَرَجٌ | وَّلَا | عَلَى الْمَرِيْضِ | حَرَجٌ | وَّلَا | عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ | اَنْ |
| कोई हर्ज/गुनाह | और ना | मरीज़ पर | कोई हर्ज/गुनाह | और ना | तुम्हारे नफ़्सों पर | कि |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَاْكُلُوْا | مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ | اَوْ | بُيُوْتِ | اٰبَآئِكُمْ | اَوْ | بُيُوْتِ | اُمَّهٰتِكُمْ |
| तुम खाओ | अपने घरों से | या | घरों से | अपने बापों के | या | घरों से | अपनी मांओं के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَوْ | بُيُوْتِ | اِخْوَانِكُمْ | اَوْ | بُيُوْتِ | اَخَوٰتِكُمْ | اَوْ | بُيُوْتِ |
| या | घरों से | अपने भाईयों के | या | घरों से | अपनी बहनों के | या | घरों से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَعْمَامِكُمْ | اَوْ | بُيُوْتِ | عَمّٰتِكُمْ | اَوْ | بُيُوْتِ | اَخْوَالِكُمْ | اَوْ |
| अपने चचाओं के | या | घरों से | अपनी फूफियों के | या | घरों से | अपने मामूओं के | या |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| بُيُوْتِ | خٰلٰتِكُمْ | اَوْ | مَا | مَلَكْتُمْ | مَّفَاتِحَهٗٓ | اَوْ | صَدِيْقِكُمْ ؕ |
| घरों से | अपनी ख़ालाओं के | या | जो | मालिक हुए तुम | उसकी कुंजियों के | या | अपने दोस्त के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَيْسَ | عَلَيْكُمْ | جُنَاحٌ | اَنْ | تَاْكُلُوْا | جَمِيْعًا | اَوْ | اَشْتَاتًا ؕ | فَاِذَا |
| नहीं | तुम पर | कोई गुनाह | कि | तुम खाओ | मिल कर | या | अलग-अलग | फिर जब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| دَخَلْتُمْ | بُيُوْتًا | فَسَلِّمُوْا | عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ | تَحِيَّةً | مِّنْ عِنْدِ | اللّٰهِ |
| दाख़िल हो तुम | घरों में | तो सलाम करो | अपने लोगों पर | तोहफ़ा (दुआ) है | पास से | अल्लाह के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مُبٰرَكَةً | طَيِّبَةً ؕ | كَذٰلِكَ | يُبَيِّنُ | اللّٰهُ | لَكُمُ | الْاٰيٰتِ | لَعَلَّكُمْ |
| बाबरकत | पाकीज़ा | इसी तरह | वाज़ेह करता है | अल्लाह | तुम्हारे लिए | आयात को | ताकि तुम |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَعْقِلُوْنَ ع (61) | اِنَّمَا | الْمُؤْمِنُوْنَ | الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | بِاللّٰهِ | وَرَسُوْلِهٖ |
| तुम अक़्ल से काम लो | बेशक | मोमिन तो | वो हैं जो | ईमान लाए | अल्लाह पर | और उसके रसूल पर |

ع 8 4 14

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاِذَا | كَانُوْا | مَعَهٗ | عَلٰٓى اَمْرٍ | جَامِعٍ | لَّمْ | يَذْهَبُوْا | حَتّٰى |
| और जब | वो होते हैं | आपके साथ | किसी काम पर | इज्तिमाई | नहीं | वो जाते | यहां तक कि |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ | اِنَّ | الَّذِيْنَ | يَسْتَاْذِنُوْنَكَ | اُولٰٓئِكَ | الَّذِيْنَ |
| वो इजाज़त ले लें उन से | बेशक | वो लोग जो | इजाज़त मांगते हैं आपसे | यही वो लोग हैं | जो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يُؤْمِنُوْنَ | بِاللّٰهِ | وَ رَسُوْلِهٖ ۚ | فَاِذَا | اسْتَاْذَنُوْكَ | لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ |
| ईमान लाए हैं | अल्लाह पर | और उसके रसूल पर | फिर जब | वो इजाज़त मांगें आपसे | अपने किसी काम के लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاْذَنْ | لِّمَنْ | شِئْتَ | مِنْهُمْ | وَاسْتَغْفِرْ | لَهُمُ | اللّٰهَ ؕ | اِنَّ |
| तो इजाज़त दे दीजिए | जिसके लिए | आप चाहें | उनमें से | और बख़्शिश मांगिए | उनके लिए | अल्लाह से | बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهَ | غَفُوْرٌ | رَّحِيْمٌ ﴿62﴾ | لَا تَجْعَلُوْا | دُعَآءَ | الرَّسُوْلِ | بَيْنَكُمْ |
| अल्लाह | बहुत बख़्शने वाला है | निहायत रहम करने वाला है | ना तुम बना लो | बुलाना | रसूल का | आपस में |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كَدُعَآءِ | بَعْضِكُمْ | بَعْضًا ؕ | قَدْ | يَعْلَمُ | اللّٰهُ | الَّذِيْنَ | يَتَسَلَّلُوْنَ |
| मानिंद बुलाने के | तुम्हारे बाज़ के | बाज़ को | तहक़ीक़ | जानता है | अल्लाह | उनको जो | खिसक जाते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْكُمْ | لِوَاذًا ۚ | فَلْيَحْذَرِ | الَّذِيْنَ | يُخَالِفُوْنَ | عَنْ اَمْرِهٖٓ | اَنْ |
| तुम में से | आड़ लेते हुए | पस चाहिए कि डरें | वो लोग जो | मुख़ालिफ़त करते हैं | उसके हुक्म की | कि |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تُصِيْبَهُمْ | فِتْنَةٌ | اَوْ | يُصِيْبَهُمْ | عَذَابٌ | اَلِيْمٌ ﴿63﴾ | اَلَآ | اِنَّ |
| पहुंचे उन्हें | कोई आज़माइश | या | पहुंचे उन्हें | अज़ाब | दर्दनाक | ख़बरदार | बेशक |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لِلّٰهِ | مَا | فِى السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضِ ؕ | قَدْ | يَعْلَمُ | مَآ | اَنْتُمْ |
| अल्लाह ही के लिए है | जो | आसमानों में | और ज़मीन में है | तहक़ीक़ | वो जानता है | वो जो हो | तुम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَلَيْهِ ؕ | وَيَوْمَ | يُرْجَعُوْنَ | اِلَيْهِ | فَيُنَبِّئُهُمْ | بِمَا |
| जिस पर | और जिस दिन | वो लौटाए जाऐंगे | तरफ़ उसके | तो फिर वो बता देगा उन्हें | वो जो |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| عَمِلُوْا ؕ | وَاللّٰهُ | بِكُلِّ | شَىْءٍ | عَلِيْمٌ ﴿64﴾ ع |
| उन्होंने अमल किए | और अल्लाह | हर | चीज़ को | ख़ूब जानने वाला है |

ع 9 3 15

## 25 سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ 42

اٰيَاتُهَا: 77 | رُكُوْعَاتُهَا: 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَبٰرَكَ | الَّذِيْ | نَزَّلَ | الْفُرْقَانَ | عَلٰى عَبْدِهٖ | لِيَكُوْنَ | لِلْعٰلَمِيْنَ |
| बहुत बाबरकत है | वो जिसने | नाज़िल किया | फ़ुरक़ान | अपने बंदे पर | ताकि वो हो जाए | तमाम जहान वालों के लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| نَذِيْرًا ۙ① | الَّذِيْ | لَهٗ | مُلْكُ | السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضِ | وَلَمْ | يَتَّخِذْ |
| डराने वाला | वो जो | उसी के लिए है | बादशाहत | आसमानों | और ज़मीन की | और नहीं | उसने बनाई |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَدًا | وَّلَمْ | يَكُنْ | لَّهٗ | شَرِيْكٌ | فِي الْمُلْكِ | وَخَلَقَ | كُلَّ |
| कोई औलाद | और नहीं | है | उसके लिए | कोई शरीक | बादशाहत में | और उसने पैदा किया | हर |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| شَيْءٍ | فَقَدَّرَهٗ | تَقْدِيْرًا ②ۚ | وَاتَّخَذُوْا | مِنْ دُوْنِهٖٓ | اٰلِهَةً |
| चीज़ को | पस उसने अंदाज़ा किया उसका | अंदाज़ा करना | और उन्होंने बना लिए | उसके सिवा | कुछ इलाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَّا يَخْلُقُوْنَ | شَيْـًٔا | وَّهُمْ | يُخْلَقُوْنَ | وَلَا | يَمْلِكُوْنَ | لِاَنْفُسِهِمْ |
| नहीं वो पैदा करते | कोई चीज़ | और वो | वो पैदा किए जाते हैं | और नहीं | वो इख़्तियार रखते | अपने नफ़्सों के लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ضَرًّا | وَّلَا | نَفْعًا | وَّلَا | يَمْلِكُوْنَ | مَوْتًا | وَّلَا | حَيٰوةً |
| किसी नुक़्सान का | और ना | किसी नफ़ा का | और नहीं | वो इख़्तियार रखते | मौत का | और ना | ज़िंदगी का |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| نُشُوْرًا ③ | وَقَالَ | الَّذِيْنَ | كَفَرُوْٓا | اِنْ | هٰذَآ | اِلَّآ | اِفْكٌ |
| दोबारा जी उठने का | और कहा | उन लोगों ने जिन्होंने | कुफ़्र किया | नहीं | ये (क़ुरआन) | मगर | एक झूठ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| افْتَرٰىهُ | وَاَعَانَهٗ | عَلَيْهِ | قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ | فَقَدْ | جَآءُوْ | ظُلْمًا |
| उसने गढ़ लिया इसे | और मदद की उसकी | इस पर | एक दूसरी क़ौम ने | पस तहक़ीक़ | वो लाए | ज़ुल्म |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّزُوْرًا ۚ④ | وَقَالُوْٓا | اَسَاطِيْرُ | الْاَوَّلِيْنَ | اكْتَتَبَهَا | فَهِيَ | تُمْلٰى |
| और झूठ | और उन्होंने कहा | कहानियां हैं | पहलों की | उसने लिखवा लिया है उन्हें | तो वो | वो इमला की जाती हैं |

معانقة 10

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَيْهِ | بُكْرَةً | وَّ اَصِيْلًا ⑤ | قُلْ | اَنْزَلَهُ | الَّذِيْ | يَعْلَمُ | السِّرَّ |
| उस पर | सुबह | और शाम | कह दीजिए | नाज़िल किया है उसे | उसने जो | जानता है | छुपी बात को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِي السَّمٰوٰتِ | وَ الْاَرْضِ ؕ | اِنَّهٗ | كَانَ | غَفُوْرًا | رَّحِيْمًا ⑥ | وَ قَالُوْا |
| आसमानों में | और ज़मीन में | बेशक वो | है वो | बहुत बख़्शने वाला | निहायत रहम करने वाला | और उन्होंने कहा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مَالِ | هٰذَا | الرَّسُوْلِ | يَاْكُلُ | الطَّعَامَ | وَ يَمْشِيْ | فِي الْاَسْوَاقِ ؕ |
| क्या है | इस | रसूल को | कि वो खाता है | खाना | और वो चलता है | बाज़ारों में |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَوْ لَآ | اُنْزِلَ | اِلَيْهِ | مَلَكٌ | فَيَكُوْنَ | مَعَهٗ | نَذِيْرًا ⑦ لَّا | اَوْ |
| क्यों नहीं | उतारा गया | इस पर | कोई फ़रिश्ता | तो वो होता | साथ इसके | डराने वाला | या |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يُلْقٰٓى | اِلَيْهِ | كَنْزٌ | اَوْ | تَكُوْنُ | لَهٗ | جَنَّةٌ | يَّاْكُلُ | مِنْهَا ؕ |
| डाला जाता | तरफ़ उसके | कोई ख़ज़ाना | या | होता | उसके लिए | कोई बाग़ | वो खाता | उसमें से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَ قَالَ | الظّٰلِمُوْنَ | اِنْ | تَتَّبِعُوْنَ | اِلَّا | رَجُلًا | مَّسْحُوْرًا ⑧ | اُنْظُرْ |
| और कहा | ज़ालिमों ने | नहीं | तुम पैरवी करते | मगर | एक मर्द की | जो सहरज़दा है | देखो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كَيْفَ | ضَرَبُوْا | لَكَ | الْاَمْثَالَ | فَضَلُّوْا | فَلَا | يَسْتَطِيْعُوْنَ |
| किस तरह | उन्होंने बयान कीं | आपके लिए | मिसालें | तो वो भटक गए | पस नहीं | वो इस्तिताअत रखते |

ع 1 9 16

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| سَبِيْلًا ⑨ ع | تَبٰرَكَ | الَّذِيْٓ | اِنْ | شَآءَ | جَعَلَ | لَكَ | خَيْرًا |
| रास्ते की | बहुत बाबरकत है | वो जो | अगर | वो चाहे | वो बना दे | आपके लिए | बेहतर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْ ذٰلِكَ | جَنّٰتٍ | تَجْرِيْ | مِنْ تَحْتِهَا | الْاَنْهٰرُ ۙ | وَ يَجْعَلْ | لَّكَ |
| इससे | बाग़ात | बहती हों | उनके नीचे से | नहरें | और वो बना दे | आपके लिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قُصُوْرًا ⑩ | بَلْ | كَذَّبُوْا | بِالسَّاعَةِ ۫ | وَ اَعْتَدْنَا | لِمَنْ | كَذَّبَ |
| महल्लात | बल्कि | उन्होंने झुठलाया | घड़ी/क़यामत को | और तैयार कर रखी है हमने | उसके लिए जो | झुठलाए |

© HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِالسَّاعَةِ | سَعِيْرًا ⑪ ج | اِذَا | رَاَتْهُمْ | مِّنْ مَّكَانٍ | بَعِيْدٍ | سَمِعُوْا |
| घड़ी को/क़यामत को | भड़कती आग | जब | वो देखेगी उन्हें | जगह से | दूर की | वो सुनेंगे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَهَا | تَغَيُّظًا | وَّزَفِيْرًا ⑫ | وَاِذَآ | اُلْقُوْا | مِنْهَا | مَكَانًا | ضَيِّقًا |
| उसकी | सख़्त ग़ुस्से की आवाज़ | और चीख़ना चिल्लाना | और जब | वो डाले जाऐंगे | उसमें | किसी जगह पर | तंग |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُقَرَّنِيْنَ | دَعَوْا | هُنَالِكَ | ثُبُوْرًا ⑬ ط | لَا تَدْعُوا | اَلْيَوْمَ | ثُبُوْرًا |
| जकड़े हुए | वो पुकारेंगे | उस जगह | हलाकत को | ना तुम पुकारो | आज | हलाकत |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّاحِدًا | وَّادْعُوْا | ثُبُوْرًا | كَثِيْرًا ⑭ | قُلْ | اَذٰلِكَ | خَيْرٌ | اَمْ | جَنَّةُ |
| एक ही | बल्कि पुकारो | हलाकतें | बहुत सी | कह दीजिए | क्या ये | बेहतर है | या | जन्नत |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَلْخُلْدِ | الَّتِيْ | وُعِدَ | الْمُتَّقُوْنَ ط | كَانَتْ | لَهُمْ | جَزَآءً |
| हमेशगी की | वो जो | वादा किए गए | मुत्तक़ी लोग | है | उनके लिए | बदला |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّمَصِيْرًا ⑮ | لَهُمْ | فِيْهَا | مَا | يَشَآءُوْنَ | خٰلِدِيْنَ ط | كَانَ |
| और लौटने की जगह | उनके लिए है | उसमें | जो | वो चाहेंगे | हमेशा रहने वाले हैं | है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلٰى رَبِّكَ | وَعْدًا | مَّسْـُٔوْلًا ⑯ | وَيَوْمَ | يَحْشُرُهُمْ | وَمَا | يَعْبُدُوْنَ |
| आपके रब पर | एक वादा | पूछा जाने वाला | और जिस दिन | वो इकट्ठा करेगा उन्हें | और जिनकी | वो इबादत करते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ دُوْنِ | اللّٰهِ | فَيَقُوْلُ | ءَاَنْتُمْ | اَضْلَلْتُمْ | عِبَادِيْ | هٰٓؤُلَآءِ |
| सिवाए | अल्लाह के | तो वो फ़रमाएगा | क्या तुमने | गुमराह किया तुमने | मेरे बंदों को | इन सबको |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَمْ | هُمْ | ضَلُّوا | السَّبِيْلَ ⑰ ط | قَالُوْا | سُبْحٰنَكَ | مَا | كَانَ | يَنْۢبَغِيْ |
| या | वो (ख़ुद) | भटक गए थे | रास्ते से | वो कहेंगे | पाक है तू | नहीं | था | जायज़ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَنَآ | اَنْ | نَّتَّخِذَ | مِنْ دُوْنِكَ | مِنْ اَوْلِيَآءَ | وَلٰكِنْ | مَّتَّعْتَهُمْ |
| हमारे लिए | कि | हम बनाते | तेरे सिवा | कोई दोस्त | और लेकिन | तू ने सामाने ज़िंदगी दिया उन्हें |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| وَاٰبَآءَهُمْ | حَتّٰى | نَسُوا | الذِّكْرَ ۚ | وَكَانُوْا | قَوْمًۢا | بُوْرًا ⑱ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उनके आबा ओ अजदाद को | यहां तक कि | वो भूल गए | नसीहत | और थे वो | लोग | हलाक होने वाले |

| فَقَدْ | كَذَّبُوْكُمْ | بِمَا | تَقُوْلُوْنَ ۙ | فَمَا | تَسْتَطِيْعُوْنَ | صَرْفًا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पस तहक़ीक़ | उन्होंने झुठलाया तुम्हें | बवजह उसके जो | तुम कहते थे | तो नहीं | तुम इस्तिताअत रखते | फेरने की (अज़ाब को) |

| وَّلَا | نَصْرًا ۚ | وَمَنْ | يَّظْلِمْ | مِّنْكُمْ | نُذِقْهُ | عَذَابًا | كَبِيْرًا ⑲ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और ना | मदद की | और जो कोई | ज़ुल्म करेगा | तुम में से | हम चखाऐंगे उसे | अज़ाब | बहुत बड़ा |

| وَمَآ | اَرْسَلْنَا | قَبْلَكَ | مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ | اِلَّآ | اِنَّهُمْ | لَيَاْكُلُوْنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | भेजा हमने | आपसे पहले | रसूलों में से | मगर | बेशक वो | अलबत्ता खाते थे |

| الطَّعَامَ | وَيَمْشُوْنَ | فِى الْاَسْوَاقِ ؕ | وَجَعَلْنَا | بَعْضَكُمْ |
|---|---|---|---|---|
| खाना | और वो चलते थे | बाज़ारों में | और बनाया हमने | तुम्हारे बाज़ को |

| لِبَعْضٍ | فِتْنَةً ؕ | اَتَصْبِرُوْنَ ۚ | وَكَانَ | رَبُّكَ | بَصِيْرًا ⑳ ع |
|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ के लिए | आज़माइश | क्या तुम सब्र करोगे | और है | रब आपका | ख़ूब देखने वाला |

ع 2 11 17

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION